
ारतमाता

भारत माता

(नाटक)

लेखक
श्री रघुवीरशरण 'मित्र'

प्रकाशक—
भारतीय साहित्य प्रकाशन
२३२-स्वराज्य पथ, सदर मेरठ

प्रकाशन तिथि— फरवरी १६५६

प्रकाशक :—

परमात्माशरण एम. ए., एल-एल. बी.

भारतीय साहित्य प्रकाशन

२३२, स्वराज्य पथ

सदर मेरठ

द्वितीय संस्करण

मूल्य

दो रुपये

मुद्रक :—

मदनगोपाल सिंहल

गोपाल प्रिंटिंग प्रेस

सदर मेरठ

आमुख

चोटी के गीत तो सभी गाते हैं, पर कितने ऐसे हैं जो गहराई के गर्त से नींव की ईंट के गीत निकाल कर लाये हैं।

इतिहास उन शहीदों पर मौन है जिनके रक्त से स्वतन्त्रता की कली कली सिंची पड़ी है। भारत की स्वतन्त्रता का इतिहास शहीदों की कहानी से भरा पड़ा है। स्वतन्त्रता की मूर्ति में उन देशभक्तों की हड्डियाँ नींव की ईंट की तरह गड़ी हुई हैं जो मर गये पर जिनकी आवाज़ें अमर हैं।

मृत्यु को सामने देख कर बड़े-बड़े योद्धा काँप जाते हैं। पर शहीदों का मस्तक फाँसी के तख्तों पर भी नहीं झुका। स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदों का इतिहास एक लम्बा इतिहास है। हर शहीद की कहानी एक पृथक् इतिहास चाहती है, और हर शहीद की कहानी वीर और करुण रस से भीगी हुई है।

भारत माता के मन्दिर में शहीदों की कोटि कोटि मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों में चन्द्रशेखर आज़ाद, सरदार भगतसिंह, यतीन्द्रनाथ दास, राजगुरु और सुखदेव जैसे शहीदों से प्रायः सभी परिचित हैं। प्रस्तुत नाटक इन वीर दिवंगत आत्माओं के जीवन चरित्र को लेकर ही रचा गया है।

स्वतन्त्रता संग्राम के वे दिन अभी आँखों के सामने हैं जब एक ओर विदेशी वस्त्रों की होली, विलायती माल पर धरना, सत्याग्रह आदि की आवाज़ सुनाई देती थी और दूसरी ओर दमन से धधकती हुई क्रान्ति की आग हिंसा के रूप में भभक उठी थी। स्वतन्त्रता की आवाज़ दबाने के लिये विदेशियों के अत्याचार देख कर नवयुवकों का रक्त उबाल लेने लगा। देश के विभिन्न भागों में कितने ही नवयुवक अपना सब कुछ त्याग क्रान्तिकारी दल में आ गये। भारत माता के वीर पुत्र माँ के हाथों की ज़ंजीरें काटने के लिये लोहे के सामने लोहा लेकर गर्ज उठे।

एक ओर महात्मा गाँधी जी की अहिंसा का बल था और दूसरी ओर नवयुवकों की रुधिरप्रिया दुर्गे का रूप था। आज़ादी की लड़ाई का

कोई क्षण ऐसा नहीं जिसमें शहीदों के रक्त के छींटे न पड़े हों। सन् इक्कीस, सन् तीस, सन् बयालीस जैसे कितने ही वर्ष सन् सत्तावन की तरह रक्त से भीगे हुए वर्ष हैं। परिणाम चाहे यह कहे कि स्वतन्त्रता अहिंसा मात्र से मिली है पर तर्क यह सिद्ध करता है कि स्वतन्त्रता शहीदों की रक्त क्रान्ति से प्राप्त हुई है। यह कह सकते हैं कि नक्कारखाने में तूती की आवाज़ की तरह चाहे शहीदों की सशस्त्र क्रान्ति छोटी हो, पर उनके बलिदान अहिंसा के अमर पुजारियों से कम नहीं।

विदेशी सरकार ने दयालु या धर्मात्मा बनकर भारत नहीं छोड़ा, वह इतनी ईमानदार भी नहीं हो गई थी कि प्रायश्चित्त के रूप में हमारा भारत हमें दे गई, अपितु वह सशस्त्र भीषण भावी क्रान्ति से कांप कर अहिंसा के चरणों में झुक गई। उसने सोचा कि यदि शान्ति से भारत नहीं छोड़ा तो रक्त-क्रान्ति से भारत छोड़ना ही पड़ेगा। क्रान्तिकारी दल, आज़ाद हिंद सेना, तथा नवयुवकों का हिंसक आवेश यह कथन सिद्ध करता है।

यह अवश्य है कि क्रान्तिकारी गाँधी जी की आवाज़ के शंखनाद से जागे। उनकी आवाज़ में देशभक्ति का रक्त और तेज था। उस क्रान्ति को भी हम पवित्र आत्मबल की वीरता कह सकते हैं, हिंसा केवल वहाँ है जहाँ दूसरे का अधिकार बलात् छीना जा रहा है, इस दृष्टि से वीर शहीदों की कहानी अहिंसा के तेजस्वी शक्ति-पुरुषों की कहानी है।

'भारत माता' नाटक एक प्रकार से कथित शहीदों की पूजा का चित्रण

है। इतिहास चाहे उनको भूल जाये, पर धरती उनको नहीं भूल सकती।

स्वतन्त्रता संग्राम के कुछ ऐतिहासिक अध्यायों और कल्पना के माध्यम से इन वीर चरित्रों को प्रदर्शित कर मैं शहीदों की समाधि पर अपनी पूजा के फूल चढ़ाता हूँ।

रघुवीरशरण 'मित्र'

पात्र

चन्द्रशेखर आज़ाद	(प्रसिद्ध क्रान्तिकारी)
सरदार भगतसिंह	(अमर शहीद)
सुखदेव	(वीरात्मा)
राजगुरु	(शहीद युवक)
यतीन्द्रनाथ दास	(दृढ़ व्रती)
बटकेश्वरदत्त	(वीर सिपाही)
मोहनदास	(युगपुरुष)
भारत	(एक प्रतीक)
हिम्मतसिंह	(मेजर जनरल)
अकबर खाँ	(सैनिक अधिकारी)
अर्विन	(अंग्रेज़ों का प्रतिनिधि)
सांडर्स	(अंग्रेज़ अधिकारी)
दीवानचन्द	(सरकारी पिट्ठू)
नौनिहाल	(नगरसेठ)
मिच्चनलाल	(प्रहसक)
चिम्मनलाल	(रसिक)
इटोनिया	(इङ्गलिश देवी)
गौरांगी	(अंग्रेज़ी सभ्यता की प्रतीक)
गरिमा	(वृद्धा माँ)
कामना	(शहीद की भावी पत्नी)
शक्ति	(शहीद की बहिन)

बुनकर, जेलर, पुलिस अधिकारी, क्रान्तिकारी, सैनिक आदि

भारत माता

पहला दृश्य

(गाँव के मैदान में बहुमूल्य विदेशी वस्त्रों की होली जल रही है। मैदान के बराबर में श्रम-जीवियों के घरों की पंक्ति है, जिनकी कुछ गृहणियाँ घर के बाहर चरखा कात रही हैं और कुछ सूत अटेर रही हैं। कुछ दूर हटकर पुरुष कपड़ा बुन रहे हैं, साथ ही सब एक स्वर में गाते भी जाते हैं :—)

फूक विदेशी वस्त्र, देश में वस्त्र करो तैयार !

श्रम के हाथों से बन्धन की कड़ियाँ टूटेंगी।
चिनगारी बन बन आँसू की लड़ियाँ छूटेंगी॥
जाग उठी है जनता जलती होली जाग उठी।
स्वतन्त्रता के लिये देश में ठंडी आग उठी॥

देखें कितनी तेज़ तुम्हारी तलवारों की धार।
फूक विदेशी वस्त्र, देश में वस्त्र करो तैयार॥

अब न रहेगा राजा कोई, सबकी धरती है।
स्वतन्त्रता जी उठी, गुलामी आहें भरती है॥
अब न परायों के हाथों हम देश लुटायेंगे।
अपने हाथों से हम अपना देश बनायेंगे॥

सत्य अहिंसा की नौका है, श्रम–बल है पतवार।
फूक विदेशी वस्त्र, देश में वस्त्र करो तैयार।।

(गीत की अन्तिम पंक्ति समाप्त होते होते ही राम नाम का तहमद बांधे नंगे बदन, कारतूसों की पेटी लटकाये, पिस्तौल लिये एक हृष्ट पुष्ट नौजवान आवेश में प्रवेश करता हुआ—)

"बन्द करो यह सत्य अहिंसा का राग अलापना, तोड़ फोड़ कर फेंक दो इन चरखों को, जला डालो इन विदेशी वस्त्रों की होली के साथ ही साथ अपने सत्य-अहिंसा के गीत भी। हाथों में बन्दूक, पिस्तौल और बम के गोले उठा लो! और जला डालो नौकरशाही की सत्ता। भिखारियों की तरह गा गा कर भीख माँगने से तुम्हें तुम्हारा देश वापिस नहीं मिलेगा। यदि अपना देश स्वतन्त्र चाहते हो तो विदेशियों के साथ वही व्यवहार करो जो उन्होंने सत्ता के मद में तुम्हारे साथ किया था। पेड़ों पर लटका लटका कर फाँसियाँ दे दो, तोपों से बाँध बाँध कर उड़ा डालो।"

(आगन्तुक कहता रहता है, पर कर्मठ नागरिक तनिक भी उत्तेजित नहीं होते, शान्ति से बुनना छोड़ कर एक बूढ़ा बुनकर कहता है।)

बुनकर—इतना आवेश, अहिंसा से इतनी घृणा! युग-पुरुष के सत्यों को अभिशाप समझ रहे हो युवक! चरखे के तारों में ही भारत की स्वतन्त्रता और सुनहरा भविष्य है। हिंसा से अहिंसा बलवती होती है, आत्म-बल से बड़ा बल बन्दूक का नहीं होता युवक!

युवक—और निर्दोष को शूली पर भी अहिंसा ही चढ़वाती है, निरपराध की कमर पर कोड़े भी अहिंसा ही लगवाती है। मैं

भी अहिंसा का पुजारी था, महापुरुष की आज्ञानुसार सत्याग्रह करके मैं भी जेल गया। पर हत्यारों की उस निर्दयता से मोम लोहा बन गया है, जो मैं भोग कर आ रहा हूँ। नंगी कमर पर गीली बेंत जल्लाद तब तक उड़ाते रहे, जब तक मैं मूर्च्छित होकर मरणासन्न नहीं हो गया। कमर के वे घाव चाहे भर गये हों, पर हृदय के घाव तब तक नहीं भरेंगे, जब तक 'जलियाँवाला बाग' और लाला लाजपतराय जैसे शहीदों के वध का प्रतिशोध नहीं ले लूँगा।

बुनकर— बदला लेकर व्यक्ति अपनी आत्म-शान्ति मान सकता है, पर प्रतिशोध से पापी का उद्धार नहीं होता। हत्यारे को मनुष्य बनाने के लिये हृदय परिवर्तन की आवश्यकता होती है। तमाचा मारने वाले के सामने जब हम अपना मुँह कर देंगे तो उसके हृदय का पशु स्वतः मर जायेगा। आत्म-ग्लानि से उसके उठे हुए हाथ देशभक्तों के सामने जुड़ कर न्याय की तुला पर आ टिकेंगे।

युवक— सत्य, दया, न्याय, प्रेम, अहिंसा! जानते हो इनकी आवाज़ कहाँ तक पहुंचती है, अत्याचारी की ठोकर तक। आँसू आततायी के पैर पर गिर कर टूक टूक हो जाता है। संसार उसके सामने नहीं झुकता जो हाथ जोड़कर झुकाना चाहता है, दुनिया उसके पैरों में गिरती है जिसके हाथ में शक्ति होती है।

बुनकर— क्या अहिंसा में शक्ति नहीं होती, यह वह शक्ति है जिसमें आत्मबल हुंकराता है। मनुष्य वही महान् है जिसमें शत्रु को भी सखा बनाने की क्षमता है, जो मानव के पशु को अपने त्याग और बलिदानों से मार सके।

युवक— ये उपदेश पुस्तकों के पृष्ठ पर लिखे रहने मात्र के लिए पर्याप्त हैं, व्यवहार के जगत में जब तक ईंट के उत्तर में पत्थर नहीं है तब तक जीवन मृत्यु मात्र है। लोहा काटने के लिये आग और लोहे की ही आवश्यकता होती है, मोम से लोहा कभी नहीं कटता।

(युवक का कथन और भी आगे बढ़ता पर एक अङ्गरेज़ अधिकारी सशस्त्र पुलिस और गोरे सैनिकों के साथ प्रवेश करता हुआ कहता है।)

अधिकारी— यही है वह चन्द्रशेखर आज़ाद जो जेल से फरार हुआ था। इसी को पकड़ने पर सरकार ने बीस हज़ार रुपया इनाम देने की घोषणा की है। और ये हैं वे गाँधी के चेले, जो चरखा चला चला कर हमारे देश के कपड़े की खपत बन्द कर देना चाहते हैं। विलायती माल की होली जला रहे हैं। खद्दर बुन रहे हैं। (आवेश में आकर) सैनिकों देखते क्या हो। इनके चरखे, सूत और बुना हुआ कपड़ा इस विलायती कपड़े की होली में ही जला डालो और काट डालो इनके हाथ और अँगूठे, जिससे हिन्दुस्तान में कोई कातने और बुनने वाला न रहे; और इस चन्द्रशेखर आज़ाद के हाथों में हथकड़ियाँ डालकर ले चलो।

(पुलिस और फौज आगे बढ़ना चाहती है पर आज़ाद की गोली पहले ही बढ़ने वाले सिपाही के पैर में आकर लगती है, वह चीखता हुआ भूमि पर गिरता है और आज़ाद कड़क कर कहते हैं।)

आज़ाद— चन्द्रशेखर अब आज़ाद है, उसे कौन बन्दी बना सकता है ! तुम्हारी मृत्यु ही तुम्हें यहाँ खींच लाई है।

(कहता हुआ अपनी अंटी से एक छोटा गोला निकाल कर फेंकता है, जिसके फूटते ही काला धुवाँ मंच पर छा जाता है। धुएं के

अंधेरे में चन्द्रशेखर गोली चलाते हुए भाग जाते हैं और पुलिस सैनिक आँख मलते हुए अन्धा-धुन्ध गोलियाँ चलाते हैं, जिससे चीत्कार करते हुए कितने ही बिचारे बुनकर मर जाते हैं, कितने ही घायल होकर कराह उठते हैं। अंग्रेज़ अधिकारी आगे पड़े एक शव पर अपना पैर रखकर अट्टहास करता हुआ कहता है।)

अधिकारी— आज़ाद भाग गया, पर भाग कर कहाँ जायेगा। जब तब उसकी लाश हम अपने पैरों से नहीं रौंदेंगे तब तक हमारी तलवार खून की प्यासी ही तड़पती रहेगी। सिपाहियो! गाँधी गाँधी चिल्लाकर आज़ादी माँगने वाले इन जुलाहों के घर जला डालो।

(सैनिक नृशंसता से अत्याचार करते हैं और घर जलाते हैं। नेपथ्य में दूर से गीत की आवाज़ आती है।)

मिट नहीं सकती शहीदों की कहानी मौत से।

कट नहीं सकती हमारी भावना तलवार से।
हम न रुकने के किसी तूफान या मँझधार से।।
हम शपथ खाकर चले हैं देश के बलिदान की।
हम मिटेंगे, मिट नहीं सकती कली उद्यान की।।

बुझ नहीं सकती जवानी की निशानी मौत से।
मिट नहीं सकती शहीदों की कहानी मौत से।।

(गीत गूंजता रहता है और धीरे धीरे यवनिका गिरती है।)

दूसरा दृश्य

(झुटपुटे का समय है, मार्ग से मिली हुई झाड़ियों के निकट पुलिस अधिकारी के बंगले का पिछला भाग पड़ता है। दूसरी ओर से चन्द्रशेखर आज़ाद के साथ सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु प्रवेश करते हैं।)

आज़ाद— इसी बंगले में रहता है वह हत्यारा सांडर्स! जिसके हाथ लाला लाजपतराय के रक्त से रंगे हुए हैं, जिसकी गोलियों और लाठियों से घायल देश-भक्त अस्पतालों में पड़े कराह रहे हैं। भगतसिंह! तुम उस ओर झाड़ी की आड़ में जाकर छिप जाओ। राजगुरु! तुम भगतसिंह की सहायतार्थ उससे कुछ दूरी पर सतर्क रहना। जैसे ही वह हत्यारा बाहर निकले भगतसिंह! तुम्हारी गोली उसके सीने से पार हो जाये।

भगतसिंह— आज यदि हत्यारा सांडर्स मेरी गोली से बच गया तो मैं अपनी मातृभूमि को अपना मुँह न दिखाऊँगा। आपके चरणों की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि या तो हत्यारे के प्राण ले लूँगा अन्यथा आत्म-हत्या करके कायरों की पंक्ति में अपना नाम लिखा लूँगा।

आज़ाद— तुम धन्य हो भगतसिंह! तुम्हारे जैसे वीर पुत्रों पर भारत माता जितना भी अभिमान करे थोड़ा है। सांडर्स को मारने की तुम्हारी यह वैसी ही प्रतिज्ञा है जैसी 'जयद्रथ-वध के लिये अर्जुन ने की थी।' महाशक्ति तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी करे।

राजगुरु— मेरा रक्त उबाल ले रहा है, जी चाहता है साम्राज्यवादी अङ्गरेज़ी सत्ता पलक मारते ही नष्ट-भ्रष्ट कर डालूँ। 'साइमन कमीशन' की काली करतूतों के प्रतिशोध में एक एक अङ्गरेज

को ज़िन्दा जला डालूँ। पर महात्मा की आवाज़ हमारे कदम रोक देती है।

आज़ाद— बढ़ते हुए पग आँधी, पानी या तूफ़ान से नहीं रुका करते। सीधी उंगलियों से घी न निकले तो उंगलियाँ टेढ़ी ही करनी पड़ती हैं। बापू इतने महान् हैं कि वे अत्याचार सह सह कर भी शान्त रह सकते हैं, पर चन्द्रशेखर आज़ाद की आँखों से अब विदेशियों के वीभत्स हत्याकाण्ड नहीं देखे जाते।

सुखदेव— (अपने हाथ में बंधी घड़ी की ओर देखता हुआ) सांडर्स के आने का समय होने वाला है। सावधान हो जाइये!

आज़ाद— राजगुरु! भगतसिंह! तुम छिप जाओ। सुखदेव को साथ लेकर मैं डी. ए. वी. कॉलेज जा रहा हूँ, जहाँ मैं तुम्हारे अभिनन्दन के लिए प्रतीक्षा में रहूँगा।

भगतसिंह— आप जाइये और हम आपके पीछे पीछे ही विजयी होकर आते हैं।

आज़ाद— (सुखदेव को साथ लेकर जाते हुए) वन्दे मातरम!

सब एक साथ— वन्दे मातरम्!

(चन्द्रशेखर आज़ाद और सुखदेव चले जाते हैं, तथा भगतसिंह और राजगुरु आड़ में छिपने का उपक्रम करते हैं।)

भगतसिंह— भैया राजगुरु! तुम मुझसे पर्याप्त दूरी पर रहना। मैं गोली मारते ही झाड़ियों की राह से कालेज की ओर दौड़ूँगा, जैसे ही तुम मुझे मुड़ता देखो वैसे ही तुम दूसरी राह से भाग जाना, क्योंकि हो सकता है गोलियों की आवाज़ के उत्तर में पुलिस गोलियाँ बरसाती हुई मेरा पीछा करे।

राजगुरु— पीछा तो तब करेगी जब मेरी गोलियों से जीवित बचेगी। आज यदि साक्षात् काल भी हमें मारने आयेगा तो भी हम नहीं मरेंगे। मनुष्य का आत्म-विश्वास कभी नहीं मरता।

भगतसिंह— ईश्वर तुम्हारा आत्म-विश्वास सदैव अमर रक्खे। तुम जाओ और छिप जाओ!

(राजगुरु दूरी पर जा छिपते हुए आँखों से ओझल हो जाते हैं एवं भगतसिंह पास ही झाड़ी की आड़ में दुबक कर पिस्तौल साधते हैं। दूसरी ओर से पुलिस अधिकारी सांडर्स वर्दी में अपने नौकर के साथ बंगले से बाहर आता है।)

सांडर्स— हमने तुमको जिस तरह समझा दिया उसी तरह सब काम करना; और देखो हमारी मेम साहब से बोल देना कि साहब आज क्रान्तिकारियों के अड्डे पर छापा मारने जा रहे हैं। हो सकता है हम देर से आयें। हमारे खाने की वेट (wait) न करें। 'डी. आई. जी.' के यहां हमारा 'डिनर' (dinner) है।

नौकर— बहुत अच्छा हुज़ूर!

(कहते हुए नौकर ने सलाम किया और साहब एक ही पग आगे बढ़े थे कि दनदनाती हुई गोली उनके सीने में आकर घुस गई। 'हाय!' कर चीख मारते हुए सांडर्स भूमि पर गिर पड़े। जिधर से गोली आई थी नौकर ने देखा कि उस ओर से एक नवयुवक भागने का यत्न कर रहा है। युवक को पकड़ने के लिए नौकर ने दौड़ना चाहा पर राजगुरु ने दूर से प्रत्यक्ष हो नौकर को सावधान करते हुए कहा।)

राजगुरु— यदि पैर आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया तो तेरी भी वही दशा होगी जो तेरे मालिक की हो चुकी है।

नौकर-- मालिक के लिए प्राण देना नौकर का धर्म है। मेरे मालिक की हत्या करके तुम तभी जा सकते हो जब मैं मर जाऊँगा।

राजगुरु-- तो तू अपने मालिक का नौकर पीछे है पहले विदेशियों का गुलाम है। हमने तेरे मालिक का खून नहीं किया बल्कि उस हत्यारे के प्राण लिए हैं जिसने सैंकड़ों निर्दोषियों के खून से अपने हाथ रंगे हैं।

नौकर— तुम्हारे भाषण का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता, तुम जा नहीं सकते।

(कहता हुआ नौकर पकड़ने के लिए दौड़ता है।)

राजगुरु— (नौकर को गोली का निशाना बनाते हुए) मरना चाहता है तो मर, इस देश के नासमझ वफादारों को मारना ही होगा।

(हाय ! कर चीखता हुआ नौकर गिर कर मर जाता है तथा भगतसिंह और राजगुरु भाग जाते हैं। तुरन्त ही कुछ पुलिस दौड़ी हुई आती है।)

एक सिपाही— मैंने एक युवक को उधर जाते देखा।

दूसरा सिपाही— (दूसरी ओर संकेत करता हुआ) एक नौजवान उधर को गया है।

तीसरा सिपाही— लगभग आध घण्टे पहले मैंने दो नवयुवकों को पूर्व की ओर जाते देखा था।

चौथा सिपाही— पैरों के चिह्न देखते हुए चलो।

(पगचिह्न देखते हुए सिपाही गोली मारने वाले को ढूँढने चले जाते हैं, कुछ पुलिस सांडर्स और नौकर के शव उठाकर ले जाती है।)

दृश्य बदलता है।

तीसरा दृश्य

(घर के एक कमरे में क्रान्तिकारी का बूढ़ा पिता भारत, अपनी पत्नी गरिमा और पुत्री शक्ति के साथ उदास दिखाई देता है।)

गरिमा— (आँसू पूछती हुई) कुछ पता नहीं मेरे लाल का, कहीं वह फिर तो नहीं पकड़ा गया, अभी तो पहली बेंतों के ही घाव नहीं सूखे हैं, दया करो जालिमो! दया करो, मेरे इकलौते लाल पर दया करो! (आवेश में आकर) क्या! क्या तुम उसे फाँसी पर चढ़ाओगे, नहीं नहीं! मुझे फाँसी पर चढ़ाओ, उसे छोड़ दो, मैं उसके बदले क्षमा माँगती हूँ। दया करो, मैं तुम्हारी काली गाय हूँ, मुझ पर दया करो! (कहते कहते पगली सी हो जाती है।)

भारत— तुम एक वीर की माँ हो गरिमा! पगली न बनो, आँसुओं को आँखों में रोको। रोने से पत्थर नहीं पिघला करते। इस तरह पागल बनने से तो दुःख और भी भारी हो जायेगा।

शक्ति— रोओ न माँ! भैया आ ही जायेंगे। दो चार दिन यदि न भी आये तो पूर्णिमा तक तो अवश्य ही आ लेंगे, उस दिन उनका विवाह है न!

गरिमा— सुनते हो शेखर! शक्ति भैया के विवाह की आशा में आँखें लगाये बैठी है, वह सुकुमारी दुलहन बनने की डोर के सहारे श्वास ले रही है, पर तुम्हारे कान में कामना की करुण पुकार क्यों नहीं पहुंचती शेखर! आ जाओ, जल्दी आ जाओ। मैं तुम्हारे माथे पर मौर देखना चाहती हूँ, तुम घोड़ी पर चढ़ोगे न! ढोल बजेंगे, नफीरी बजेगी, तुम घोड़ी पर चढ़ोगे, तुम्हारे

हाथ में मेंहदी लगेगी, अपनी गोरी बहू के रचे हुए हाथ देखकर मैं गीत गाऊँगी, आओ मेरे लाल ! आ जाओ !

'माँ ! मैं आ गया' (कहता हुआ शेखर आता है ।)

गरिमा— (उद्वेग से अपने बेटे से चिपटी हुई) आ गया मेरा बेटा ! अब मैं तुझे कभी नहीं जाने दूँगी । मेरी शपथ खा मेरे लाल कि मैं अब कभी नहीं जाऊँगा ।

शेखर— माँ ! तुम यह समझो कि तुम मेरी भारत माँ हो, इस भूमि के कोटि कोटि बन्दी पुत्र तुम्हारे लाल हैं । माँ ! मैं तुम्हारे हाथों की हथकड़ियाँ काटे बिना शान्ति से नहीं बैठ सकता ! मैं जा रहा हूँ माँ ! प्रणाम पिता जी ! नमस्कार माँ !

भारत— जाने से पहले हमें ज़हर क्यों नहीं दे जाता !

शेखर— जो गुलाम है उसे ज़हर देने की आवश्यकता नहीं, पराधीन तो बिना ज़हर के ही मरा हुआ होता है । हम अपने को जीवित समझ कर भूल कर रहे हैं ।

भारत— ममता आदर्शों से नहीं जीती जाती । हम हथकड़ियों का दुःख सह सकते हैं, पर तुम्हें फाँसी पर लटका नहीं देख सकते ।

शेखर— 'बिस्मिल' और 'अशफ़ाक़' जैसे करोड़ों शहीदों के भी माता पिता थे । जिस प्रकार उन माँ बापों ने अपना हृदय पत्थर किया था, उसी तरह आप भी पत्थर बन जाइये ।

शक्ति— भैया ! तुम्हें मेरी राखी की सौगन्ध है, सर देकर भी देश का सर ऊँचा करना । लेकिन बहिन की एक इच्छा है, पूर्णिमा के दिन विवाह के लिये अवश्य आ जाना । नहीं तो कामना विष खा लेगी ।

शेखर— कामना को मेरे प्यार की सौगन्ध दिला कर कह देना कि कायर की तरह आत्महत्या करके मेरे प्यार को कलंकित न करे। यदि कामना न रही तो मेरा ब्रह्मतेज भी मर जायेगा। विवाह की घड़ी पर आने का यत्न करूँगा। सामने से पुलिस आ रही है, अब मैं जाता हूँ।

(कहता हुआ दीवार फाँद कर चला जाता है। माँ चिल्लाती रहती है, पुलिस आती है।)

दारोगा— चन्द्रशेखर आज़ाद किधर गया?

गरिमा— नहीं नहीं, तुम उसे न पकड़ो, मुझे पकड़ लो! मुझे मारो, मुझे फाँसी पर चढ़ा दो!

(पुलिस माँ को धक्का देकर जिधर शेखर गया था उधर ही दौड़ती है। नेपथ्य में पिस्तौलें चलने की आवाज़ें होती हैं।)

दृश्य बदलता है।

चौथा दृश्य

(युगपुरुष मोहनदास के सामने बहुत से नौजवान बैठे हैं, नौजवानों में वेष बदले हुए दत्त, राजगुरु, सुखदेव आदि क्रान्तिकारी भी हैं।)

राजगुरु— अङ्गरेज़ों के अत्याचार बहुत बढ़ते जा रहे हैं युग देवता ! स्वतन्त्रता के आन्दोलन को हर दमन से दबाया जा रहा है। सत्याग्रहियों को जेल में कठोर से कठोर यातनायें दी जाती हैं। विदेशी माल के बहिष्कार में धरना देने वाली माँ बहिनों पर पाशविक अत्याचार होते हैं। अब यह सब देखा नहीं जाता। अब तो तलवार का उत्तर तलवार से देने की घोषणा करो !

युगपुरुष— अभी तो कुछ भी नहीं देखा। अभी तो सत्याग्रह का प्रथम चरण ही है। असहयोग आन्दोलन की अभी तो आवाज़ भी अङ्गरेज़ों के कानों तक पूरी तरह नहीं पहुंची। शान्ति से असहयोग आन्दोलन चलाते रहो, सफलता निश्चित होगी। पर ....

दत्त— पर क्या बापू !

युगपुरुष— जितनी जल्दी सारे भारतवासी एक होकर एक आवाज़ में भारत माता की जय बोलेंगे, उतनी ही जल्दी अङ्गरेज़ यहाँ से चले जायेंगे। लेकिन दुःख है कि यह देश अपनी फूट की ज्वाला से आप ही जला जा रहा है। साम्प्रदायिकता का ज़हर देश की रग रग में समा गया है। फिरकापरस्ती की डायन रक्त पीने को मुँह बाये खड़ी रहती है। यह हिन्दू है, वह मुसलमान है, ब्राह्मण भंगी को दुतकारता है, वैश्य एक ही हाड़ माँस से बने

मनुष्य को अछूत कहकर पास नहीं बैठाता। यह छूआछूत का रोग देश के लिए मृत्यु का स्वरूप है। संसार के सभी मनुष्य एक ही ईश्वर ने बनाये हैं। हरि के बनाये हुए सभी जन हरिजन हैं। अछूतों को अपने से अलग करना अपने अङ्ग को काटकर फेंक देना है। अङ्गरेज़ के द्वारा फैलाई हुई इस भेद नीति को जिस दिन प्रेम से नष्ट कर दोगे उसी दिन स्वतन्त्रता भारत के चरणों में आ पड़ेगी।

राजगुरु— लेकिन बापू! मौहम्मद अली जिन्ना तो मानते ही नहीं। वे तो मुसलमानों को अलग और हिन्दुओं को अलग करने पर तुले हैं। इस्लाम की दुहाई देकर वे मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं।

सुखदेव— आँखों की पट्टी कैसे हटेगी देवता!

युगपुरुष— प्रेम से, सद्विचारों से, सत्य और अहिंसा से भूले हुए भाइयों को समझाओ!

राजगुरु— पर क्या अङ्गरेज़ बदल सकता है?

युगपुरुष— यत्न किये बिना ही असफलता स्वीकार करना भूल है। परिणाम कुछ भी निकले, पर मनुष्य को सद्प्रयत्न नहीं छोड़ना चाहिये। मेरा विश्वास है दानव मानव बन सकता है।

सुखदेव— यह ठीक है बापू! आप से भेंट करके पाषाण भी पिघल जाता है। फिर भला भूले भाई क्यों नहीं समझेंगे। लेकिन जानकर शोषण करने वाले राक्षस होते हैं।

(सहसा कुर्ता हिलाते हुए यतीन्द्रनाथ दास प्रवेश करते हैं।)

दास— अरे तुम लोग सब यहाँ थोड़ी देर के मेहमान हो, अभी कोई खतरनाक बात होने वाली है। वहाँ सांडर्स को गोली से मार दिया।

मुखदेव— (कृत्रिम आश्चर्य से क्रोध प्रकट करते हुए) अच्छा हुआ, अत्याचारी को उसके कर्मों का फल मिल गया।

युगपुरुष— अच्छा नहीं हुआ, बुरा हुआ। हिंसा से हिंसा और बढ़ती है। एक सांडर्स को मार कर हमें स्वतन्त्रता तो नहीं मिल जायेगी। स्वतन्त्रता तो तब मिलेगी जब हमारे आत्म-बल के सामने अङ्गरेज़ों का पशु-बल हार मान लेगा। अहिंसात्मक क्रान्ति से ही हम स्वराज्य ले सकते हैं। हिंसात्मक क्रान्ति से यह देश लहू लुहान हो जायेगा और न जाने हमारी स्वतन्त्रता की आवाज़ कब तक के लिए बन्द हो जाये। इस लिए शान्ति से असहयोग आन्दोलन चलना चाहिए। सत्याग्रह ही हमारे लिए सुगम मार्ग है।

दत्त— सत्याग्रह के प्रतिकार स्वरूप जलियाँवाले बाग में जो कुछ हुआ वह देख कर जी चाहता है कि हिंसात्मक क्रान्ति की आवाज़ उठाई जाये।

युगपुरुष— यह भूल मत करना! समय जागरण की आवाज़ चाहता है, हिंसात्मक क्रान्ति का रक्त नहीं चाहता। संसार प्रेम से फलता फूलता है, शत्रुता से नहीं। उतावले होकर यदि सशस्त्र क्रान्ति करने की कल्पना भी की, तो परिणाम में हमारी स्वतन्त्रता सौ वर्ष पीछे चली जायेगी।

राजगुरु— आपकी आज्ञा पर सर नत-मस्तक है महात्मा! पर हृदय अङ्गरेज़ों के अत्याचारों से उबल उठता है। खून के बदले खून, दुनिया इसी सिद्धान्त की है।

युगपुरुष— शान्ति रखो नवयुवक! ईश्वर पर विश्वास रख कर सत्य और प्रेम से स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष करते रहो। मनुष्य का कर्म यत्न करना है, फल ईश्वर की इच्छा से मिलता है।

(बातें चल ही रही थीं कि पुलिस अधिकारी सशस्त्र पुलिस के साथ आता है।)

पुलिस अधिकारी— मुझे आपको सरकार की यह आज्ञा सुनानी पड़ रही है कि मैं आपको बन्दी बनाने आया हूँ।

युगपुरुष— हम तो प्रतीक्षा ही कर रहे थे। आपने इतनी पुलिस लाने का कष्ट व्यर्थ ही किया। हम तो केवल आप के ही साथ चले चलते।

पुलिस अधिकारी— मैं अपनी नौकरी के नियमों से बँधा हुआ हूँ और फिर प्रत्येक आप ही जैसा सहिष्णु तो नहीं है।

(पुलिस युगपुरुष को बन्दी बना कर ले जाती है।)
(नवयुवक नौ दो ग्यारह हो जाते हैं।)

दृश्य बदलता है।

पाँचवां दृश्य

(चन्द्रशेखर आज़ाद, सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु एक गुप्त स्थान पर कुचक्र रचनार्थ आते हैं। यह स्थान नगर से दूर किसी एक बड़े मन्दिर का जीर्ण खंडहर है, जहाँ अब कोई दर्शन करने नहीं जाता। इस खण्डहर में एक कमरा इस प्रकार गिरी हुई दीवारों से ढका हुआ है कि कोई यह सोच भी नहीं सकता कि इस में कोई जायेगा। इस कमरे में एक बड़ी मोमबत्ती जल रही है, जहाँ पहले से ही युवक यतीन्द्रनाथदास आगन्तुकों की प्रतीक्षा कर रहा है। आज़ाद साथियों सहित आकर इस कमरे में बैठते हैं।)

आज़ाद—देख लिया शान्ति का परिणाम! अङ्गरेज़ों ने युगपुरुष सहित हमारे नेताओं को बन्दी बना लिया। अब इस राज्य को पलटने के लिये अपने सर हथेली पर रखने का समय आ गया है। जब तक इन अत्याचारियों को मौत के घाट नहीं उतारा जायेगा, तब तक ये हमें कीड़े मकौड़ों की तरह मारते रहेंगे। आज हम ऐसा षड्यन्त्र रचने पर विचार करने बैठे हैं, जिससे अङ्गरेज़ों का राज्य समाप्त हो जाये। लेकिन यह पग मृत्यु का आलिंगन करने के लिये उठा हुआ पग होगा। हम में से किसी को भी यदि जीवन प्यारा है तो वह अभी से इस आग में पैर न डाले।

भगतसिंह—हमें ज़िन्दगी से अधिक स्वतन्त्रता प्यारी है। हम स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राण दे देंगे। हम दासता का जीवन नहीं चाहते, स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये मृत्यु चाहते हैं।

सुखदेव— हम मर सकते हैं, पर पग पीछे न हटायेंगे।

राजगुरु-- हम स्वतन्त्रता के लिये अपनी जान दे देंगे।

यतीन्द्र— आत्मा अमर है, मृत्यु से आत्मा नहीं मरता। मर कर मनुष्य दूसरा नया जीवन पा लेता है। यदि स्वतन्त्रता के लिए बार बार भी मरना पड़े तो दास स्वयं को बार बार भाग्यशाली समझेगा।

आज़ाद— मुझे स्वयं अपने साथियों से ऐसी ही आशा है। पर तुम किसी भी कष्ट में काँपोगे नहीं, मैं इसका प्रमाण चाहता हूँ।

भगतसिंह— सरदार प्रमाण चाहते हैं! तो लो।

(कहते हुए भगतसिंह ने अपने उल्टे हाथ की हथेली जलती हुई मोमबत्ती की लौ पर रख दी और मुस्कराते रहे। आज़ाद ने उनका हाथ जलती हुई लौ से हटा कर चूमते हुए कहा—)

तुम धन्य हो भगतसिंह! मुझे ऐसे ही साथी चाहियें। सुखदेव! राजगुरु! मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि हवा को अपनी हथेली से रोक दो!

(सुखदेव और राजगुरु हवा के रुख अपना हाथ करने को उठते हुए।)

सुखदेव—हवा हमारी मुट्ठी में है, जब हम चाहेंगे तब बहेगी, और जिधर हम चाहेंगे उधर बहेगी।

राजगुरु—मैं मृत्यु को मार चुका हूँ। मेरे विराट रूप में प्रलय एक बूँद की तरह समाई हुई है, आँख से निकली हुई उस बूँद में दासता डूब जायेगी।

आज़ाद—मुझे तुम पर भी विश्वास हो गया। वही सरदार विजयी होता है, जिस सरदार की आज्ञा पालन करते समय सैनिक औचित्य या अनौचित्य को नहीं सोचते। जो सेना सेनापति की हर आज्ञा पर कटिबद्ध रहती है वह सेना अजेय है।

(यतीन्द्रनाथ दास की ओर देखते हुए) दास भाई ! आपकी वीरता के गीत तो दिशाओं की दीवारों पर लिखे हुए हैं। जिस ओर मेरी दृष्टि जाती है उसी ओर से दास का आत्मबल मुझे गति देता है। आप हम सबसे महान् हैं।

दास— आज़ाद की वीरता और दास की आत्मा दो नहीं हैं। मुझ में और तुम में एक ही ज्योति का प्रकाश है। आत्मा अमर है। जीवन और मरण की चर्चा छोड़ो, आज्ञा दो कि हमें अब क्या करना है।

आज़ाद— हर प्रान्त में अपने 'भारत माँ' दल के साथियों पर पूरा विश्वास तो है, दास बाबू ?

दास— यह सोच कर चलिये कि वे विश्वासघात भी कर सकते हैं। संसार विश्वास पर टिका हुआ है, पर विश्वासघात से कोई नहीं बचा।

भगतसिंह— तो फिर क्या किया जाय ?

दास— किया क्या जाय ! अपनी योजनाओं को सफल बनाने के लिए आगे बढ़ो, सावधान रहकर पग बढ़ाओ, फिर चाहे परिणाम कुछ भी निकले। हार या जीत का दुःख नहीं होता, दुःख अपनी भूल और अकर्मण्यता का होता है।

आज़ाद— यदि हम सफल हुए तो भी हमारी जय है, यदि असफल हुए तब भी हम विजयी होंगे। क्योंकि जो आग हम धधका जायेंगे, वह बुझेगी नहीं। क्रान्ति की ज्वाला स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व समाप्त न होगी। इसलिए क्रान्ति का जयनाद करो !!

सुखदेव— लेकिन सरदार अब हमारे पास पैसा बिल्कुल नहीं रहा, धन के बिना संसार का अच्छा या बुरा कोई भी काम नहीं

चलता। धन के बिना हथियार कैसे खरीदेंगे, दल का काम कैसे चलेगा, बम बनाने के लिये जो गुप्त फैक्टरी का निर्माण किया है उसके लिए पर्याप्त पैसा चाहिए।

आज़ाद— इस देश में इतने बड़े बड़े सेठ भरे पड़े हैं, जिनकी तिजोरियों में नोटों के बंडल पड़े पड़े ही जंग खा जाते हैं, उन सेठों का पैसा फिर किस दिन काम आयेगा! धन देश का होता है। पूँजी किसी व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं है, वह तो देश की धरोहर होती है। देश के लिए जब उसकी आवश्यकता हो देश उसे ले सकता है। रुपया तुम्हें थोड़ी देर में यहीं मिल जायेगा। इतने उस षड्यन्त्र को समझ लो, जो कल करना है।

सब एक साथ— हम प्रस्तुत हैं, आप आज्ञा दीजिये।

आज़ाद— कल हमें अङ्ग्रेज़ों को सावधान करने के लिए पहला आक्रमण करना है। यह आक्रमण असेम्बली भवन पर होगा। कल तुम्हें असेम्बली में बम फेंकना है भगतसिंह! बटकेश्वरदत्त तुम्हारे साथ रहेंगे। और बम फेंकने के तुरन्त बाद मैं तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हें वहीं मिलूँगा। भाई दास! तुम बंगाल जाकर 'भारत माँ' दल की व्यवस्था दृढ़ करो। सुखदेव! राजगुरु! तुम लाहौर रहो। यदि महाशक्ति ने हमारा साथ दिया तो वह दिन दूर नहीं, जब सेना में भी विद्रोह की आग धधक उठेगी; और फिर एक दिन वही होगा जो इतिहास में १८५७ के नाम से प्रसिद्ध है।

दास— महाकाली की कृपा से अवश्य ही एक दिन सफल महाक्रान्ति होगी। भारत माँ के मस्तक पर मुकुट धरा जायेगा। देखें कौन कौन वीर भारत माता के मस्तक पर अपने अपने लहू का टीका लगाते हैं।

आज़ाद—अच्छा, अब आप थोड़ी देर इसी कमरे में ठहरें। मैं रुपया लाता हूँ।

(कहकर आज़ाद खण्डहर से बाहर निकल सड़क के किनारे एक पेड़ की आड़ में खड़े हो गये। उन्हें खड़े हुए कुछ ही मिनट बीती थीं कि नगरसेठ पेट पर हाथ फेरते हुए दो चार चपरकनातियों के साथ टहलते आते हैं।)

नगरसेठ— काँई बात छे मुनीम चिम्मनलाल जी! आई मार्ग में तो घणो ही सूणो से।

चिम्मनलाल— डर की कुछ बात नहीं है सेठ जी! इस तरफ ठंडी हवा बड़ी ही नमकीन चलती है। (एक साथी की ओर देखते हुए) क्यों मिच्चनलाल जी!

मिच्चन—शिमले और मसूरी की ठंडी ठंडी जोड़ी का मेल इसी सड़क पर तो होता है।

चिम्मन— वाह! वाह!! वाह!!! क्या बात कही है तुमने मिच्चनलाल! शिमले और मसूरी का मज़ा आ गया। गर्म गर्म पसीना ठंडा हो गया।

नगरसेट— म्हारो मन भी हरो होन लागरो से। ठंडी ठंडी हवा से कालजो वर्फ सो शीतल हैगो।

चिम्मन— ज़रा आगे और चलिये। जंगल की हवा लगते ही बुढ़ापा जवानी में बदल जायेगा।

मिच्चन— लेकिन मुझे तो यहीं पर ठंडे पसीने आ रहे हैं।

नगरसेठ— घणी दूर जाणी म्हारे बसको कोय ना!

(छिपा हुआ शेखर एकदम निकल कर)

शेखर— घबराइये नहीं सेठ जी ! अब आपको आगे जाने का कष्ट न उठाना पड़ेगा। (पिस्तौल तानते हुए) आपको ठंडा करने के लिए यह तापहारिणी पर्याप्त है।

(सेठ जी काँपने लगते हैं और उनके साथी डर के मारे हाथ जोड़ कर दया की भीख माँगते हुए पैरों पर लेट जाते हैं।)

नगरसेठ— म्हारो कांईं कुसूर सै ?

शेखर— तुम्हारा अपराध यह है कि देश में स्वतन्त्रता की लड़ाई छिड़ी हुई है, देशभक्त स्वतन्त्रता के लिए अपना सर हथेली पर लिए बलिदान के पथ पर चले जा रहे हैं, और तुम पूँजी पर सर्प की तरह कुण्डली मारे बैठे हो। स्वतन्त्रता संग्राम के लिए धन चाहिए। बोलो, धन देना स्वीकार है या प्राण देना चाहते हो ?

नगरसेठ— दुःख, घणा दुःख ! देशभक्त डाकुओं की तरह हत्यारे बनकर राह चलने वालों पर लूट मार करैं सैं। म्हारे देश के सेठ परोपकार के लिए जी खोलकर धन देनो जाने सैं। भामाशाह म्हारे राजस्थाण को ही था। हमसे जितना धन चाहो स्वतन्त्रता की लड़ाई के लिए ले लो। स्वतन्त्रता का इतिहास जब लिखा जायेगा तो उसमें सेठों के नाम पर स्याही लगी हुई नहीं होगी।

शेखर— सोने के अक्षरों में लिखा जायेगा तुम जैसे सेठों का नाम !

(दोनों साथी हाथ जोड़ते हुए उठकर) और हमारा नाम भी पीतल के अक्षरों में लिखवाना।

नगरसेठ— तो सेवा की आज्ञा करो ना ?

शेखर— पचास हज़ार रुपया अभी चाहिए।

नगरसेठ— मनीम जी ! पचास हज़ार रुपया इनको लाकर दे दो। (शेखर की ओर देखते हुए) क्या आप अपना नाम बताने की ………

शेखर— मुझे चन्द्रशेखर आज़ाद कहते हैं। …………

नगरसेठ— चन्द्रशेखर आज़ाद ! आपने इतना कष्ट क्यों उठाया ? किसी को भी भेजकर अपने नाम से जब भी आवश्यकता हो मुझसे रुपया मंगा लें।

शेखर— भविष्य में ऐसा ही किया करूँगा।

नगरसेठ— रुपया लाने में लगभग आधा घण्टे का समय लगेगा।

शेखर— आध घण्टे बाद उस सामने वाले बड़ के पेड़ के पास एक व्यक्ति मिलेगा, उसे रुपया दे जाना (कहकर शेखर चले जाते हैं।)

चिम्मन— आज तो प्राण बाल बाल बच गये।

मिच्चन— उस दुखभंजिनी को देखते ही पसीना ठंडा हो गया, अब ज़रा गर्मी आई है।

चिम्मन— चलो, अब जल्दी से रुपया लाकर पहुँचा दो, नहीं तो घर बैठे ही क्रियाकर्म हो जायेगा।

नगरसेठ— मरवाणे की बात छोड़ दो, चलो जल्दी। रुपया जल्दी पहुंचाय दो !

(सब चले जाते हैं।)

दृश्य बदलना है।

छटा दृश्य

(एक बड़े बंगले में ब्रिटिश राज्य के अङ्गरेज़ और भारती अफ़सर बैठे विचार विमर्श कर रहे हैं। इन अधिकारियों के मध्य में कुछ चुने हुए अङ्गरेज़ों के पिट्ठू बैठे हुए अङ्गरेज़ों का मुँह देख रहे हैं। सबसे बड़ा अङ्गरेज़ अधिकारी लार्ड अर्विन आवेश में कहता है।)

अर्विन—हिन्दुस्तान में चारों तरफ क्रान्तिकारी फैल गया है, बगावत बढ़ती जा रही है। तुम सब लोग क्या करता है? सब लोग कांग्रेस के साथ होता जा रहा है। हर आदमी गांधी और जवाहरलाल की जय बोल कर आज़ादी आज़ादी की धूम मचाता है। तुम्हारी अमन सभा का कुछ असर नहीं होता। पोलिस से न तो सत्याग्रही ही डरता है और न क्रान्तिकारी ही दबते हैं।

पुलिस अधिकारी—हुज़ूर, हम बहुत जल्दी ही क्रान्तिकारी दल के डाकुओं को पकड़ लेंगे।

अर्विन—कब पकड़ोगे? जब हिन्दुस्तान में ग़दर हो जायेगा! हर रोज़ कोई न कोई पुलिस अफसर गोली से उड़ा दिया जाता है। सांडर्स को मार डाला, पर तुम कुछ न कर सके। सरकार के खजाने लूट लिये जाते हैं और पुलिस कुछ नहीं कर पाती। क्रान्तिकारी हर स्थान पर आक्रमण कर देते हैं और हम कुछ नहीं कर सकते।

सरकारी पिट्ठू—सरकार! आप चिन्ता न करें। हमारी अङ्गरेज़ सरकार का ये आज़ादी की रट वाले कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

अर्विन— हमको तुम्हारी राजभक्ति पर भरोसा है। जितना रुपया चाहो ख़र्च करो। जलसे करो, जलूस निकालो और जैसे भी हो इन आज़ादी की चाह वालों के लिये घृणा पैदा कर दो। सरकार तुम्हें बड़े बड़े इनाम देगी। राय साहब और राय बहादुरी के ख़िताबों से तुम अमर हो जाओगे।

सरकारी पिट्ठू — आप देखते रहिये साहब! हम आज़ादी का नाम लेने वालों का नाम मिटा देंगे। 'अमन सभा' में शहर के बड़े बड़े राजसेवक सरकार की ख़िदमत के लिये शामिल हैं। सब लोग अङ्गरेज़ की जय बोलते हैं। आने वाले चुनावों में हिन्दुस्तान के सब लोग 'अमन सभा' के उम्मीदवारों को ही वोट देंगे। रायसाहब चिम्मनलाल, रायसाहब मिच्चनलाल, रायसाहब भोंदूमल, रायबहादुर दीवानचन्द जैसे कितने ही व्यक्ति देशभक्तों को कुचलने के लिये आपके झण्डे के साथ हैं।

अर्विन— हमको तुमसे ऐसी ही आशा है।

सरकारी पिट्ठू— तो इस बार ख़िताब बाँटते समय सेवक को न भूलिये।

अर्विन— गदर में जिन लोगों ने हमारी सहायता की थी उन लोगों को हमने मालदार बना दिया। ख़िताब ही क्या, तुम्हारी सेवाओं के बदले तुमको वे पुरस्कार मिलेंगे, जिनको तुम्हारी पीढ़ियाँ तक भोगती रहेंगी।

सरकारी पिट्ठू — थैंक्स सरकार, धन्यवाद!

(कहता हुआ सरकारी पिट्ठू चला जाता है।)

अर्विन— (अपनी मुट्ठी पर मुट्ठी मारता हुआ) ये स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता चिल्लाने वाले तिरंगा झंडा लेकर अङ्गरेज़ सरकार को मिटाना चाहते हैं, चींटी हाथी को कुचलना चाहती है। किन्तु यदि हम चाहें तो दस दिन में सारे भारतवर्ष को फूंक सकते हैं। हम हिन्दुस्तान नहीं छोड़ेंगे और यदि छोड़ेंगे भी तो राख करके। आज़ादी की आग और अधिक नहीं भड़क सकती, हम शोषण से मनुष्य को अस्थिमात्र बना देंगे। इधर नोट बिखेर कर नाज के भाव बढ़ा देंगे, अन्न मिलना बाजार में बन्द हो जायेगा। जनता भूखी मरने लगेगी। फिर देखेंगे कि भारत में स्वतन्त्रता की आग कैसे उठती है। हिन्दुस्तानियों का खाना हमारे हाथ में होगा, कपड़ा हमारे हाथ में रहेगा। वे खा नहीं सकते, पहन नहीं सकते और बोलेंगे तो हमारी भाषा में। किसी भी देश को जब गुलाम बनाना हो, सबसे पहले उसकी भाषा मिटानी चाहिए। जहाँ जिस देश की भाषा होती है वहाँ उसी देश का राज्य रहता है। (चपरासी की ओर देखते हुए) गोरांगी और इटोनिया को बुलाओ।

(चपरासी जाता है, और अन्दर से गोरांगी और इटोनिया सज्जित अङ्गरेज़ी वेषभूषा में आती हैं। दोनों गुड ईवनिंग करती हुई अर्विन से हाथ मिलाती हुई।)

अर्विन— मैडम गोरांगी! तुम अङ्गरेज़ी कलचर हर हिन्दुस्तानी की नस नस में भर दो; और डियर इटोनिया! तुम किसी तरह 'रिवाल्यूशनरीज़' के सरदार आज़ाद पर जादू चला कर उसे क़ैद कराओ।

इटोनिया और गोरांगी— जो हुकुम हुज़ूर!

(नेपथ्य में कोलाहल एवं जयकारों की ध्वनि होती है तथा धुआँ उड़ता हुआ दिखाई देता है। ऊपर की ओर देखते हुए अर्विन आगे कहते हैं।) यह शोर कैसा है ? धुवाँ क्यों उठ रहा है ?

एक अफसर— सरकार, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिये जलूस निकल रहा है और उसी जलूस में प्रदर्शनार्थ बड़े बड़े क़ीमती विदेशी वस्त्र जलाये जा रहे हैं।

अर्विन— (क्रोध से) लाठियाँ मार मार कर तितर बितर कर दो। जलूस में जो लीडर हों उनको पकड़ कर जेलखाने भेज दो।

अफसर— सरकार जलूस में बच्चे और स्त्रियाँ भी हैं।

अर्विन— रहम के लिये कोई स्थान नहीं है। जिसके दिल में दया होती है, वह राज्य नहीं कर सकता। जो आज़ादी का नाम ले, उस पर जितने भी अत्याचार कर सकते हो करो।

(सुनते ही अफसर चला जाता है। नेपथ्य में चीत्कार और चीखों से दिशाएँ गूँज उठती हैं। अट्टहास करता हुआ अर्विन अपने हाउस की तरफ चला जाता है।)

दृश्य बदलता है।

सातवाँ दृश्य

(सुनसान सड़क से मिले हुए एक बाग में भगतसिंह और दत्त प्रवेश करते हैं।)

भगतसिंह— एसेम्बली भवन यहाँ से थोड़ी ही दूर है। इस समय दो बजे हैं, बम फेंकने के निर्धारित समय में अभी चालीस मिनट शेष हैं। यहाँ से एसेम्बली भवन तक पहुंचने में अधिक से अधिक दस मिनट लगेंगे।

दत्त— पर सुखदेव और राजगुरु तो अभी तक नहीं आये, वे तो यहाँ हम से बहुत पहले पहुंच जाने चाहियें थे। आतंकित बम तो सरदार आज़ाद ने उनके द्वारा ही भेजने को कहा था।

'हम पहले ही आ गये हैं।' (सुखदेव और राजगुरु ने एक पेड़ के पीछे से प्रकट होते हुए कहा।)

भगतसिंह— आप तो भूत की तरह प्रकट हो गये।

राजगुरु— जो अपना जीवन सब में घोल देते हैं वे सर्वव्यापक हो जाते हैं। हम भूत नहीं सर्वव्यापक हैं। जहाँ चाहते हैं छिप जाते हैं और जहाँ चाहते हैं प्रकट हो जाते हैं।

दत्त—अच्छा, प्रकट तो हो चुके, अब हमें छिपना है।

सुखदेव— तो सूर्य नारायण से प्रार्थना करो जिससे कि सब उल्लू हो जायें और दिन में देख न सकें

भगतसिंह— लाओ, बम हमें दो! आज हमें अङ्गरेज़ी सरकार और उनके रायबहादुरों और खानबहादुरों को बता देना है कि क्रान्ति की वह चिनगारी जाग उठी है जो नौकरशाही को

भस्मसात् कर देगी। रक्तदान बहुत कर चुके। खून के बदले खून लेना अब हमारा ध्येय बन गया है। (हाथ में बंधी घड़ी की ओर देखते हुए) समय हो गया, शीघ्रता करो !

(राजगुरु बम की पोटली उन्हें देते हैं। पोटली लेकर भगतसिंह और दत्त दक्षिण की ओर गमन करते हैं, तथा सुखदेव और राजगुरु पूर्व की ओर जाते हैं। कुछ दूर जाकर राजगुरु और सुखदेव पुनः प्रवेश करते हैं।)

राजगुरु-- आवश्यक बात तो कहना ही भूल गये, यह तो कहा ही नहीं कि सरदार शेखर मोटर साइकिल अकस्मात् बिगड़ जाने के कारण समय पर आपकी सहायता के लिए न पहुंच सकेंगे। इसलिए बम फेंकते ही आप नौ दो ग्यारह हो जायँ।

सुखदेव— तो अब क्या !

राजगुरु— अब तो कुछ भी नहीं हो सकता। वे एसेम्बली भवन के निकट पहुंच लिए होंगे।

सुखदेव— तो हम एसेम्बली भवन के निकट चलें !

राजगुरु-- हम वहाँ पहुंच कर उनकी सहायता कर ही क्या सकते हैं? वहाँ जाकर उन्हें बचाने से पहले स्वयं ही पकड़े जायेंगे।

सुखदेव-- तब फिर क्या करें।

राजगुरु— हम यहीं कहीं छिप जायें और क्या होना है इसकी प्रतीक्षा करें।

सुखदेव— हाँ, इस समय तो यही ठीक है। सामने जो पहाड़ी दीख रही है उसकी आड़ में छिप जायें।

(कहते हुए दोनों चले जाते हैं। पिछला दृश्य बदलता है। एसेम्बली भवन के अधिवेशन में अङ्गरेज़ अधिकारियों के मध्य लोकसभा के भारतीय सदस्य और अधिकारी बातचीत करते हुए दिखाई देते हैं। सहसा भगतसिंह और दत्त निर्भीकता से द्वार के निकट आते हैं।)

भगतसिंह— सावधानी से गोला ऐसे फेंकना है कि मृत्यु किसी की भी न हो।

दत्त— लेकिन सभी इस प्रकार बैठे हैं कि बम बचा कर फेंका ही नहीं जा सकता।

भगतसिंह— बम मुझे दो। मैं बीच में बिछी हुई उस मेज़ पर लक्ष्य करके फेंकूँगा। मेरा विश्वास है कि मेज़ नष्ट हो जायेगी पर मृत्यु किसी की न होगी।

दत्त— तो लो यह गोला।

(भगतसिंह बम लेकर एसेम्बली भवन में प्रवेश करते हैं और लक्ष्य करके बम फेंकते हैं। गोला मेज़ पर गिरते ही एक भयंकर धमाका होता है। सभी अधिकारी घबरा कर इधर उधर भागने का उपक्रम करते हैं। भगतसिंह और दत्त एक ओर को खड़े हुए मुस्कराते हैं।)

दत्त— अब यहाँ से तुरन्त निकलना चाहिए।

भगतसिंह— लेकिन शेखर के आने की ध्वनि तो अभी तक नहीं हुई।

दत्त— हो सकता है सहसा किसी आपत्ति के आने से न आ सके हों। इसलिये तुरन्त भाग चलना चाहिए। यदि यहाँ कुछ पल और रुके तो फिर बच निकलने का कोई उपाय न होगा।

(जैसे ही भगतसिंह और दत्त निकलने के लिये घूमते हैं, वैसे ही पुलिस के साथ एस. पी. वहाँ आ धमकते हैं।)

एस. पी.— आप दोनों बन्दी बनाये जाते हैं।

(कहता हुआ एस. पी. भगतसिंह और सुखदेव को हथकड़ियाँ पहनाता है।)

भगतसिंह— (हथकड़ियाँ पहनते हुये) इन लोहे की हथकड़ियों और बेड़ियों की उम्र से कहीं बड़ी उम्र देश की दासता है। जो देश गुलाम होता है, उस देश का निवासी चाहे एस. पी. हो या राजा, बन्दी ही है। बन्दी बनाने वाले सरकार के गुलामो! अपनों की हत्या और परायों की सेवा छोड़ दो। यदि तोड़ सकते हो तो तोड़ दो भारत माँ के पैरों में पड़ी हुई जंजीरें, जो तुम जैसे गुलाम हाथों ने पहना रखी हैं। यदि अपने ही इन अङ्गरेज़ों के साथी न होते तो ये मुट्ठी भर अङ्गरेज़ इतने बड़े भारत पर हुकूमत कभी न कर पाते।

एस. पी.— हम कर्त्तव्यनिष्ठ, राज-भक्त सेवक हैं। भारतीय अपने मालिक को प्राणों से भी अधिक मूल्यवान् समझता है। हमने यह सुनना और सोचना नहीं सीखा कि कौन अपना है और कौन पराया। हम तो सरकार के आज्ञाकारी सेवक हैं। अपने मालिक की आज्ञानुसार हम क्रान्तिकारियों को नष्ट करके ही दम लेंगे।

दत्त— क्रान्तिकारियों को नष्ट करने वाली तलवार न कभी बनी है, न कभी बन सकती है। जनता के अन्तर से जो क्रान्ति की आग उठती है वह अभीष्ट की प्राप्ति किये बिना शान्त नहीं होती।

(एक अंग्रेज़ अट्टहास करता हुआ आता है।)

अंग्रेज़ अफ़सर— वैल डन, वैल डन ! शाबाश, शाबाश ! तुमने इनको पकड़ लिया। सरकार तुमको बड़ा इनाम देगी। ले जाओ, इन क्रांतिकारियों को। इनको अंधेरी कोठरी में डाल दो, जिससे ये सूरज की रोशनी को तड़प तड़प कर मर जायें। जहाँ इनको पता चल जाय कि अङ्गरेज़ से लड़ाई लेने का क्या नतीजा होता है। ले जाओ इनको और तड़पा-तड़पा कर फाँसी पर चढ़ा दो।

(कहता हुआ अङ्गरेज़ गुस्से से दाँत पीसता है, भगतसिंह और दत्त बन्दे मातरम् और भारत माता की जय आदि कहते हुए एस. पी. के पहरे में बन्दीगृह के लिये चले जाते हैं।)

यवनिका गिरती है।

आठवाँ दृश्य

(बन्दीगृह के फाटक पर पुलिस का कठोर पहरा है। भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु बन्दी रूप में बन्द हैं— गरिमा पगली सी चीखती आती है।)

—'कहाँ है, मेरी आँखों का तारा, कहाँ है? उसे छोड़ दो, वह निर्दोष है, तुमने उसे जेल में क्यों बन्द किया? क्या कहा— 'तुम्हारा बेटा खूनी है, हम उसे नहीं छोड़ेंगे, उसे फाँसी होगी!' नहीं, नहीं, वह खूनी नहीं है!'

राजगुरु— शान्त माँ, शान्त!

— 'मैंने उसे जन्म दिया है, मैं उसे जानती हूँ।'

भगतसिंह— शान्त माँ!

— 'वह बड़ा दयालु है, तुम उसे छोड़ दो, छोड़ दो। उसे नहीं छोड़ोगे, नहीं छोड़ोगे, तो मैं तुम्हारे गले घोट दूँगी। इन लोहे के सींकचों में आग लगा दूंगी। छोड़ो, नहीं तो मैं इनको तोड़ती हूँ।'

(कहती हुई अपना सर जेल के सींकचों पर दे दे कर मारने लगती है, प्रहरी पकड़ते हैं, गरिमा के माथे से खून चूने लगता है। भारत और शक्ति प्रवेश करती हैं।)

भारत— दुःख में पगली न बनो। तुम वीरपुत्र की वीरमाता हो। तुम्हारा शेखर अभी नहीं पकड़ा गया, वह आज़ाद है। ये तो उसके साथी सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु हैं।

गरिमा— तो क्या ये मेरे बेटे नहीं ! हर देशभक्त मेरा पुत्र है, मेरा शेखर कहता था न "माँ ! तुम भारत माता हो, इस देश के कोटि कोटि पुत्र तुम्हारे लाल हैं।" मैं भगतसिंह की माँ हूँ, मैं आज़ाद की माँ हूँ, बिस्मिल और अशफाक़ मेरे बेटे थे, हर शहीद मेरा बेटा है, प्रत्येक वीर की माँ मैं हूँ, मैं वीरमाता हूँ, मैं इस कारागृह को फूँक दूँगी, मैं विदेशी सरकार में आग लगा दूंगी।

(कहती हुई जेल के सींकचे ज़ोर से हिलाती है। पहरेदार उसे अलग करता हुआ—)

प्रहरी— आप बंदियों से मुलाकात करके चली जायें, नहीं तो हमें इस बुढ़िया को पुलिस के हवाले करना पड़ेगा।

गरिमा— पुलिस ! चोर और डाकुओं को पुलिस कहते हो; रोटी के टुकड़े पर अपने भाइयों की हत्या करने वाले सिपाही नहीं होते, सिपाही तो मेरे बेटे हैं जो भारत माँ की बेड़ियाँ काटने के लिये सर हथेली पर लिये बैठे हैं।

(पुलिस के साथ अङ्गरेज़ ज़िला अधिकारी पैंथम जेलर के साथ धमकता हुआ—)

पैंथम— इन सब लोगों को जेल से निकालो, अब हम सुखदेव, राजगुरु और भगतसिंह से बातें करेंगे।

(पुलिस भारत, शक्ति, गरिमा आदि को निकालने लगती है, पर शक्ति और भारत बहकती हुई गरिमा को स्वयं ही ले जाती हैं।)

पैंथम— क्यों भगतसिंह ! फाँसी पर चढ़ेगा या माफी माँग कर अङ्गरेज़ों की गुलामी करना माँगता है। तुम अगर माफी माँगेगा तो हम तुमको छोड़ देगा, और रायबहादुर बना देगा।

भगतसिंह— शेर को पिंजरे में बन्द करके कुत्ता भी [illegible] है, कहीं मैं बँधा हुआ न होता तो ये शब्द निकल[illegible]। तेरी ज़बान काट लेता।

पैंथम— (दाँत पीसता हुआ) तुम पागल हो गया है।

राजगुरु— तभी तू ऐसी बातें कर रहा है जैसी पागल कुत्ते का काटा हुआ करता है।

पैंथम— मैं तुम तीनों को गोली से मार दूँगा।

सुखदेव— हम तो पहले ही सर से कफ़न बाँध कर निकले थे। मृत्यु तो मुसाफिर के लिये सफर की नींद है। मर कर प्रतिशोध लेने के लिए हम फिर नया जन्म लेंगे।

पैंथम— तुम नहीं मानेगा! तुम उस युगपुरुष का बहकाया हुआ फिरता है।

भगतसिंह— उस महात्मा के प्रति यदि कोई भी शब्द निकाला तो हम जेल की इन दीवारों को तोड़ कर तुम्हारे सर फोड़ डालेंगे।

पैंथम— सर तो अब तुम्हारे काटे जायेंगे। (पुलिस की तरफ देखता हुआ) इन तीनों को फाँसीघर में ले चलो। (जेलर की ओर देखता हुआ) जेलर साहब! जल्लाद को हुकुम दो कि इन तीनों को फाँसी होगा।

जेलर— जो हुकुम! (कहता हुआ जेलर चला जाता है। पुलिस तीनों बन्दियों को बाहर निकाल फाँसीघर का दरवाज़ा खोलती है। सामने जल्लाद और जेलर दिखाई देते हैं।)

पैंथम— देर की ज़रूरत नहीं, इन तीनों को फाँसी पर लटका दो।

ारैमा— तो कर ! फाँसी सदैव सुबह को दी जाती है, अब तो रात हो

शेखर कहत

कोटि को रात कुछ नहीं, हमारा हुकुम—इनको इसी वक्त फाँसी आज़ाद कर और इनकी लाशें बोरी में बन्द करके सतलज नदी में —क आओ, या मिट्टी का तेल छिड़क कर जला डालो। देर मत करो, जल्दी करो।

(जल्लाद तीनों के गले में फाँसी के फन्दे डालता है।)

भगतसिंह—खूनी, अत्याचारी, पिशाच! तेरे अन्याय की तलवार एक दिन तेरे ही गले पर चलेगी। हमारे रक्त की एक एक बूँद ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर विनाश की ज्वाला बन कर धधकेगी। हमारी माँ की आँखों का एक एक आँसू ब्रिटिश साम्राज्य को बाढ़ बनकर डुबा देगा।

सुखदेव— वह दिन दूर नहीं, जब विश्व के न्यायालय में तुमसे प्रश्न किया जायेगा कि निर्दोषों को फाँसी के बदले तुम्हें क्या दण्ड दिया जाय।

पैंथम— अब तुम्हारा अन्तिम समय है, कोई इच्छा हो तो कहो।

राजगुरु— इच्छा! हम चाहते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश हो।

पैंथम— (जल्लाद की ओर देखता हुआ) आर्डर! फाँसी फौरन दी जाये।

(जल्लाद डोरी खींचता है। तीनों शहीद भारत माता की जय बोलते हुए बन्दे मातरम् कहते हैं। एक झटके के साथ तीनों फाँसी पर लटके हुए दिखाई देते हैं। दृश्य बदलता है। सतलज नदी के किनारे चिता धधकती दिखाई देती है। .... धीरे धीरे मुख्य परदा गिरता है।)

अङ्क समाप्त

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(पहाड़ियों से ढके हुए एक टेढ़े मेढ़े छोटे मैदान में क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठक हो रही है। एक ओर भारत माता का विशाल चित्र टंगा हुआ है, दूसरी ओर बन्दूकें पिस्तौलें आदि टंगी हुई हैं। इस दृश्य में अस्त्र शस्त्रों से सजे हुए कुछ नवयुवक शान्ति से ऐसे मौन बैठे हैं कि पास आने पर भी देखे बिना किसी को यह पता नहीं चल सकता कि यहाँ कोई है। धीरे से एक विचित्र ध्वनि हुई और चन्द्रशेखर आज़ाद ने गुप्त द्वार से प्रवेश किया। सब युवक बिना शब्द करे उठे और अभिवादन करके बैठ गये।)

आज़ाद— शहीदों का रक्त रंग लाये बिना नहीं रह सकता। हमारे तीन वीर साथी इस विदेशी सरकार ने फाँसी पर चढ़ा दिये। सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु आज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनकी आत्मा हम सबकी आत्मा में विद्यमान है। उनका बलिदान हमारे लिये जागरण है। भारत माता के मन्दिर में उन स्वर्ग के देवताओं पर हम सब अपने रक्त का अर्घ्य चढ़ाते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक विदेशी सरकार नष्ट नहीं होगी तब तक हम सर से कफन बाँध कर लड़ते रहेंगे

(सब अपनी अपनी उंगली तराश कर रक्त के छींटे देते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं—)

सब एक स्वर में— हम अपने लहू की सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा करते हैं कि या तो विदेशी सरकार को नष्ट कर देंगे, अन्यथा लड़ते लड़ते ही मातृभूमि पर अपने प्राणों की आहुति दे देंगे।

आज़ाद— वीरों का विवाह मृत्यु ही से होता है। मौत को दुल्हन बनाने के लिए हम सर से कफन बाँध कर निकल पड़े हैं, हम या तो स्वतन्त्रता को वरेंगे या मौत को गले से लगायेंगे।

(नेपथ्य से रोने पीटने की आवाज़ आती है।)

आज़ाद— यह रोने पीटने की आवाज़ कहाँ से आ रही है! (एक युवक की ओर संकेत करते हुए) तनिक चुपचाप जाकर देखो तो नौजवान!

(नौजवान जाता है। रोने पीटने की आवाज़ हृदयविदारक होती जाती है।)

आज़ाद— न जाने कौन दुखी रो रहे हैं!

(युवक वापिस आकर—)

—'सतलज तट पर शहीद भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के माता पिता तथा कुटुम्ब वाले फूट फूट कर रो रहे हैं। उनका रोना देखा नहीं जाता।'

आज़ाद— अभी तुमने रोना देखा ही कहाँ है जो देखा नहीं जाता! किसने उन माताओं का क्रन्दन सुना है जो सूली पर चढ़े अपने बेटों की याद में रात दिन आँसू बहाती रहती हैं? कौन उन विधवाओं पर अत्याचार नहीं करता जो हाथ में अपने पति के खून की मेंहदी लगाये बैठी हैं? किसने उस बूढ़े पिता के आँसू पूँछे जो पुत्र के हाथ से क्रियाकर्म की आशा लिए हुए ही सदा के लिए सो गया?

(युवकों की आँखों में आँसू छलछला आते हैं।)

आज़ाद— आँसू आँखों में ही रोको नौजवानो! रोने से पाषाण नहीं पिघलेंगे। वह मनुष्य मर गया जिसकी गोद में आँसू हँस पड़ता था। आज तो आँसू की अर्थी सजा कर निकाली जाती है, इसलिये कि दुखी और रोये। मैं तुम्हारी आँखों में आँसू नहीं आग देखना चाहता हूँ।

(नौजवान आँसू पूँछ लेते हैं और उनकी आँखें लाल हो जाती हैं।)

एक युवक— हम भगतसिंह की मौत का प्रतिशोध लेंगे। हम हत्यारों को जिन्दा जला डालेंगे।

आज़ाद— जय भारत माता! तो तुम तैयार हो जाओ। इस बार जेल से अपने सभी साथियों को छुड़ाने के लिये सर हथेली पर रख लो। (एक नक्शा खोलते हुए) देखो यह है वह सड़क, और यह है उस मैदान के बराबर जेलखाना। जेल के अन्दर हमारा कुचक्र चल चुका है। कैदी तुम्हारे साथ होंगे।

(एक नौजवान बाहर से घबराया हुआ प्रवेश कर—)

—'अभी अभी सूचना मिली है कि हमारे षड्यन्त्र का भेद खुल गया है। सरकार सावधान हो गई है। जेलखाने के चारों ओर फौज और पुलिस का कड़ा पहरा है।'

आज़ाद— यह कैसे हुआ?

एक युवक— जान पड़ता है हम में ही कुछ देशद्रोही आ मिले हैं।

आज़ाद— शत्रु से हम नहीं डरते, हम डरते हैं तो अपने ही भाइयों से, जो दोस्त के चोले में शत्रु का बाना पहने हुए हैं। हमारी

फूट से हमारा घर बार बार जला है! उस ग़द्दार का पता लगाओ जिसने शत्रु को हमारा भेद दिया है।

(कुछ युवक पैर में गोली लगे एक नौजवान को लेकर आते हैं

एक युवक--पता लगाने की आवश्यकता नहीं, हम उसे पकड़ लाये हैं। यह है वह ग़द्दार जो शत्रु को हमारा भेद देता है।

आज़ाद—अरे यह ! यह तो हमारा विश्वासपात्र है। हे ईश्वर ! कौन जान सकता है कि अपना हृदय भी अपना शत्रु होता है। सखे ! यह तूने क्या किया ?

घायल युवक— मैंने ही कोई अनोखा काम नहीं किया। विभीषण और जयचन्द जैसे ग़द्दारों से इस देश का इतिहास भरा पड़ा है। लालच में मनुष्य क्या नहीं करता ! लेकिन अब मैं आत्म-ग्लानि से गला जा रहा हूँ। मेरे गोली मारकर मेरा अन्त कर दो। मैं क्षमा नहीं आत्म-शान्ति चाहता हूँ।

आज़ाद—कायर कहीं के, हमारी गोली तुझ जैसे पापी के लिये नहीं है। हम तुझे दण्ड देंगे, पर मृत्युदण्ड नहीं। (एक युवक की ओर देखते हुए) इसकी जीभ और उंगलियाँ काट डालो, जिससे देश में जयचन्द जैसे न पनपें।

(युवक कटार से देशद्रोही की जीभ और उंगलियाँ काटने को बढ़ना चाहता है पर इससे पहले ही घायल युवक बराबर में टंगी हुई पिस्तौल उठाकर अपने माथे में गोली मार लेता है, और यह; कहता हुआ प्राण छोड़ देता है--)

— "मुझे क्षमा करना ! मनुष्य के लिये आत्म-ग्लानि से बड़ी मृत्यु कोई नहीं होती। जय भारत !"

आज़ाद— मनुष्य पापी नहीं होता। उसे पापी बनाया जाता है। साथियो! यह भी एक शहीद है। हम इसको अभिवादन करते हैं।

(सब एक साथ शव को सैनिक अभिवादन करते हैं।)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(नगरसेठ के साथ मिच्चनलाल और चिम्मनलाल मूँछें पैनाते आते हैं।)

मिच्चन— सेठ जी ! आज तो गधों की भी रसगुल्लों से दावत कर दो !

सेठ— क्यों, क्या गधों में बुद्धि आने लगी है।

चिम्मन— नहीं सेठ जी ! बात उल्टी है, बुद्धिमान गधे होते जा रहे हैं।

सेठ— क्या मतलब ?

मिच्चन— मतलब यही कि दुनियां में गधों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस लिये गधे इकट्ठे होकर हम पर हमला करने चले आ रहे हैं। सावधान हो जाइये, वह देखिये सामने से गधों की बरात चली आ रही है।

चिम्मन— बरात नहीं फौज चली आ रही है।

सेठ— क्या ! क्या ये सब जो— 'डियर, मैडम, यस नो, डेम फूल यू, उल्लू का पट्ठा मैं' करते चले आ रहे हैं सब गधे हैं ?

मिच्चन— गधे ही नहीं गधों के भी बाप के बाप के बाप के बाबा के चाचा के नाना के फूफा के ताऊ के साले की बहू के भैया हैं।

चिम्मन— हाँ, सेठ जी ! तभी तो ऐसे चले आ रहे हैं जैसे हमारे साले सलज के साथ चले आ रहे हों।

सेठ— शान्त हो जाओ ! वे आ गये।

(दीवानचन्द के साथ गोरांगी और इटोनिया पंखा भलती हुई आती हैं।)

सेठ— मेम साहब आ रही हैं।

मिचन— आदमी तो मालदार मालूम होते हैं।

चिम्मन—क्यों क्या राल टपकने लगी।

मिचन— हाँ बात तो कुछ ऐसी ही है, अम्मा बनाने को जी चाहता है। (मेम साहब की तरफ देखता हुआ) नमस्कार माता जी !

गोरांगी— गुडनाइट डियर ! गुडनाइट !

सेठ— कहिये मेम साहब ! तुम इधर क्यों आया है, क्या उधर का पुरुष अनाथालय फुल (Full) हो गया ?

इटोनिया— हम तुमसे दोस्ती करने आया है, हम तुमको लव (Love) करेगा।

मिचन— लव क्या होना है मेम जी !

गोरांगी— लव, लव का मतलब है हम तुमको प्रेम करेगा।

मिचन— अरे ओ चिम्मन !

चिम्मन— हाँ मिचन !

मिचन— सुना तूने, मेम साहब क्या कहती हैं, कहती हैं हम तुमको प्रेम करेगा। कहो, कैसा ख्याल है मेम साहब का।

चिम्मन—ख्याल बिल्कुल विलायती जान पड़ता है

नगरसेठ— तो बायकाट करो इस ख्याल का, गाँधी जी कहते हैं कि कोई भी विलायती चीज़ मत अपनाओ।

चिम्मन— 'हम लव माँगता नयी !'

मिच्चन— तू आवारा नहीं तो मैं तो चार जन्म से क्वारा हूँ।

इटोनिया— (मिच्चन का हाथ पकड़ती हुई) आओ लवर ! हम तुम को प्रेम करके बड़ा आदमी बनायेगा।

चिम्मन— अबे खोपड़ी गंजी कर देंगी मेम साहब !

मिच्चन— फिर हमारा कौन बाल बाँका कर सकता है।

नगरसेठ—जान पड़ता है क्रिया कर्म के लिये औलाद पैदा करने वाले हो।

मिच्चन— पुत्र तो मैं आपका हूँ ही, आपने पैर फैलाये कि धन मेरा !

नगरसेठ— अबे तो क्या तू मेरा मरना चाहता है।

मिच्चन— मेम साहब जैसी भूतनी जिस नौजवान के सिर पर सवार हो जाती हैं वे जल्दी ही अपने बाप की बिल्टी कटवा डालते हैं।

गोरांगी— (राय साहब की ओर देखती हुई) ये सब क्या बोलता है ?

दीवानचन्द— ये बोलता है मेम साहब बहुत अच्छा बोलता है।

इटोनिया— तो ये सब हमारे कलचर में आना माँगता ?

मिच्चन— तुम्हारी कलचर में आना माँगता, बिल्कुल माँगता मेम साहब ! तुम हमारी औरत होना माँगता, हम तुम्हारी कलचर मंजूर करता।

गोरांगी— तुम बहुत अच्छा आदमी है, हम तुमको इनाम देंगे, तुम हमारा काम करेगा।

मिच्चन— बिल्कुल करेगा मेम साहब !

गोरांगी-- हम चन्द्रशेखर आज़ाद को देखना माँगता।

नगरसेठ— तुम उसको देखकर क्या करेगा मेम साहब!

गोरांगी— हम उसको सीधे रास्ते पर लायेगा।

नगरसेठ— उस ब्रह्मचारी को मत छेड़ना मेम साहब! सामने आ गया तो साया उतार कर खद्दर की धोती बाँधने लगोगी।

मिच्चन-- मेम साहब! कहीं उस पंडे को देख लिया तो हम मुस्टन्डे मच्छर नज़र आने लगेंगे।

चिम्मन— प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं, बबर शेर चला आ रहा है।

(शेखर पिस्तौल लिये दो तीन पिस्तौलधारियों के साथ आता है। राय साहब दीवानचन्द काँपने लगते हैं।)

आज़ाद— रुपया लाओ, रुपया!

नगरसेठ— अच्छे समय पर पकड़ा है मूंजियों को, राय साहब हैं, मेम साहब हैं, चाहे जितना रुपया ले लो इनसे। ये तो तुम पर दिवाने हैं आजाद जी! तुम्हें ढूँढते फिरते हैं।

आज़ाद-- (कुछ सोचते हुए) अच्छा, तो मेम साहब हमको ढूँढने आई हैं। कहिये राय साहब, कैसे मिजाज हैं? क्या इरादा है?

राय साहब-- कुछ नहीं, कुछ नहीं!

आज़ाद-- कुछ नहीं क्या, विदेशियों के पिट्ठू बनकर देशभक्तों को फाँसी दिलाते फिरते हो! सावधान, यह पिस्तौल अभी तुम्हारा काम तमाम करे डालती है।

(पिस्तौल की नली राय साहब की तरफ करते हैं।)

राय साहब-- मुझे माफ कर दो, माफ कर दो मुझे!

गोरांगी— डाकू की तरह हत्या करके क्यों दुर्बलों की जान लेते हो ?

आज़ाद— चुप रहो मेम साहब ! क्या तुम्हारी इन भूरी आँखों ने फाँसी के वे तख्ते नहीं देखे जिन पर अनगिनत शहीदों का रक्त पड़ा है ! क्या तुमने वे सड़कें नहीं देखीं, जिन पर बेरहमी से बच्चों को बूटों से रौंदा गया, और बहिन बेटियों पर पशुता का नंगा नाच हुआ ? उन शहीदों की मिट्टी अभी तक चीख रही है जिनको तोप के मुँह से बाँध बाँध कर उड़ाया गया है।

इटोनिया— लेकिन हम उनको ही कब अच्छा कहते हैं, तुम हमारे साथ आओ हम तुम्हें प्रेम देंगे, जिससे तुम्हारी दुनिया इन्द्रपुरी में बदल जायेगी।

आज़ाद— क्षमा करो देवी ! शेखर किसी स्त्री के जाल में नहीं फँसता। काले बालों की हथकड़ियाँ लोहे की जंजीरों से कहीं कठोर होती हैं। मैं तुम्हारे रूप में फँस विदेशी सभ्यता का अनुयायी नहीं बनूँगा।

गोरांगी— हम तुम्हें बड़ा अफसर बना देगा !

आज़ाद— जो हृदयों का राजा हो उसे अधिकारी बनने की चाह नहीं होती।

इटोनिया— मैं तुमसे विवाह करके तुम्हें अपनी नगरी का सम्राट् कर दूंगी।

आज़ाद— और मैं तुम्हें माँ बनाकर तुमसे निस्वार्थ प्रेम चाहता हूँ।

इटोनिया— (आँखें नीची करती हुई) हमने हार मान ली और तुम जीत गये। तुम्हारे सत्य ने हमें पराजित कर दिया। हम भी तुम्हारे साथ हैं आजाद ! आजादी की लड़ाई में हम तन मन धन से तुम्हारे साथ हैं।

गोरांगी— तुम किस लिये आई थीं और क्या कर रही हो इटोनिया !

राय साहब— मैं भी आपके साथ हूँ चन्द्रशेखर जी ! मैं अपना सारा धन देश सेवा के लिये आपको अर्पण करता हूँ।

आज़ाद— सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाये तो वह भूला नहीं रहता। हम आपके दान के लिये आपको धन्यवाद देते हैं।

गोरांगी— इटोनिया ! राय साहब ! तुमने सरकार के साथ धोखा किया है, सरकार तुम्हारी बोटी बोटी कटवा देगा।

(मिच्चन और चिम्मन ठोसा दिखाते हुए)

—'ठंडा पानी लायें मेम साहब !'

गोरांगी— शट अप !

(मिच्चन और चिम्मन हँसते हुए मेम साहब का मज़ाक उड़ाते रहते हैं। मेम साहब अकड़ती हुई चली जाती है।)

(सब गाते हैं।)

आँखों में आँसू हाथों में जलते अंगारे।
स्वतन्त्रता के लिये देश के दीवाने जागे।
देश दीप के लिये करोड़ों परवाने जागे॥
पराधीनता की ज़ंजीरें तोड़ गिरा देंगे।
स्वयम् मिटेंगे या परदेशी राज्य मिटा देंगे॥
प्रलय बुला देंगे धरती पर तोड़ेंगे तारे।
आँखों में आँसू हाथों में जलते अंगारे॥

शपथ शहीदों की हमको हम आज़ादी लेंगे।
हम भारत को नयी ज़िन्दगी नया राज्य देंगे॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख और ईसाई एक हुए।
बिछड़े हुए देश के सारे भाई एक हुए॥

भारत माता के वीरों के गूँज उठे नारे।
आँखों में आँसू हाथों में जलते अंगारे॥

(गाते हुए सब चले जाते हैं।)

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(खादी की सुन्दर साड़ी पहने तिरंगा झण्डा लिये कामना बड़े मकान के चौक में आती हुई—)

कामना—जब तक देश की नारियां स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये घरों से नहीं निकलेंगी तब तक स्वतन्त्रता देवी दूर ही हटती रहेगी। मैं देश की स्वतंत्रता के लिये लड़ूंगी, उठते हुए तूफान को भारत माता की जय से दबा दूँगी। मैं उस वीर की होने वाली पत्नी हूँ जिसने विदेशी सरकार के छक्के छुड़ा दिये। क्या मैं घर में बैठकर विजेता आज़ाद की ज्योति को कलंकित कर दूँ, नहीं, यह कभी नहीं हो सकता।

(युगपुरुष मोहनदास के साथ गरिमा, शक्ति और इटोनिया प्रवेश करती हैं।)

शक्ति— बढ़ते हुए पैरों के साथ कोटि कोटि पैर बढ़ चलते हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में आज जो नहीं चला कल इतिहास उस पर आँसू बहायेगा। रुको मत बहिन, मैं भी तुम्हारे साथ हूँ।

इटोनिया— और भारत की स्वतन्त्रता के लिये मैं भी तुम्हारे साथ चल रही हूँ। जो दूसरे देश की स्वतन्त्रता पर अपनी शक्ति की तोप चलायेगा वह पहले इटोनिया के मस्तक पर चलेगी।

युगपुरुष— अब कोई इस देश को दास नहीं रख सकता। जिस देश की देवियाँ हुँकार उठती हैं उस देश से मृत्यु बहुत दूर चली जाती है।

गरिमा—यह क्या कर रहे हो महात्मा!! मेरा बेटा तो मुझ से दूर

हो ही गया, अब मेरी बेटी और बहू पर तो दया करो। जिसके हाथ फूल उठाते हुए भी मैले हो जाते थे, क्या वह अत्याचारियों के कोड़े खा सकेगी! जो कभी एक क़दम भी पैदल नहीं चल सकती थी क्या वह गाँव गाँव पैदल घूम कर सत्याग्रह कर सकेगी!

युगपुरुष— भारत की देवियाँ जितनी कोमल होती हैं उतनी ही शक्तिसम्पन्ना भी! वह सुकुमारी सीता जो कभी पलंग से नीचे पैर भी नहीं रखती थी, समय पर वनों में शूलों पर चलीं। भारत माता की बेटियों की कहानियां धरती के कण कण में लिखी हुई हैं। झाँसी की रानी तथा चित्तौड़ की क्षत्राणियों जैसी कितनी ही वीर देवियाँ चाँद और सूरज की तरह अमर हैं। नारी की शक्ति के सामने तो यमराज को भी बार बार हारना पड़ा है।

कामना— हमें वरदान दो माँ! हम प्राण देकर भी देश के अभिमान की रक्षा करें।

गरिमा— सती को वरदान की क्या आवश्यकता है बेटी! तुम तो साक्षात् वरदान हो! मैं तो उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ जब स्वतन्त्र भारत में तुम दुल्हन बनकर मेरे घर में आओगी!

शक्ति— और मैं भाभी के साथ होली और दिवाली मनाऊँगी।

युगपुरुष— युद्ध के समय मोह आने से कायरता आ जाती है। इस समय हम सब का एक ही लक्ष्य है, और वह है स्वतन्त्रता प्राप्ति!

इटोनिया— भारत माता की—

सब— जय!

(गाती हैं।)

सोने वालो ! उठो, देश में छिड़ी लड़ाई है।
स्वतन्त्रता के लिये उठा लो हाथों में झण्डे।
जीवन बन कर बरसो, कर दो अंगारे ठण्डे॥
आज़ादी का शंख बज गया अब कैसी देरी।

(नेपथ्य में शंख बजता है।)

आँधी बन कर मचल रही है मिट्टी की ढेरी॥
रोने वालो ! उठो, हर्ष की बेला आई है।
सोने वालो ! उठो, देश में छिड़ी लड़ाई है॥

(गीत की समाप्ति पर आज़ाद मुस्कराते हुए आते हैं। कामना मुस्करा कर आँखें नीची कर लेती है। गरिमा दौड़ कर, 'बेटा ! बेटा !' कहती हुई आज़ाद को चिपटा लेती है। आज़ाद धीरे से अलग होते हुए।)

आज़ाद—माँ ! तुम्हारी आँखों के आँसू और कामना के प्रेम से शेखर के पैर नहीं रुक सकते ! लेकिन आज मैं प्रसन्न हूँ, बहुत प्रसन्न ! कामना को जिस रूप में मैं देखना चाहता था उसी रूप में मैं देख रहा हूँ। कामना ! सचमुच तुम मेरे हृदय की कामना हो !

कामना— मैं तो आपके चरणों की धूलि हूँ, मेरे देवता !

आज़ाद— तुम तो मेरे पैरों की गति हो कामना ! तुम्हारे प्रेम की ज्योति मुझे अँधेरे में उजाला दिखाती है देवी !

कामना—सामने प्रशंसा करके दासी को लज्जित न करो नाथ ! वह स्त्री ही क्या जो पति की गति और मति नहीं बन सकती !

(सहसा पुलिस आती दिखाई देती है। इटोनिया घबरा कर कहती है।)

—'पुलिस, आज़ाद, पुलिस !'

(आज़ाद एक बड़ी कुर्सी के नीचे घुस जाते हैं। पुलिस आती है।)

एस. पी.— आज़ाद किधर है !

इटोनिया— अभी अभी (दूसरी ओर संकेत करते हुए) उस तरफ गये हैं। बैठिये, बहुत पसीना आ रहा है। बहुत गर्मी में आ रहे हैं। थोड़ा पानी पीते जाइये।

एस. पी— क्या भूख और क्या प्यास, इन क्रान्तिकारियों ने नाक में दम कर रक्खा है। छलावे की तरह अभी यहाँ हैं तो अभी न जाने कहाँ चले जाते हैं।

इटोनिया— आप बैठिये तो सही (कहती हुई एस. पी. को अपनी आड़ में उसी कुर्सी पर लाकर बिठाती है जिसके पीछे आज़ाद छिपे हुए थे।)

कामना— (घबरा कर दूसरी ओर देखती हुई) इधर न आओ स्वामी ! इधर पुलिस है।

(एस. पी. चौंक कर उठता है और उधर दौड़ता है जिधर कामना संकेत कर रही थी। पुलिस के हटते ही आज़ाद बाहर निकलते हैं और दीवार फाँद कर भाग जाते हैं।)

युगपुरुष— सत्याग्रह का समय आ गया है बेटियो ! आज तुम्हारा जत्था पिकेटिंग के लिये विलायती बाज़ार में जायेगा। हो

सकता है विलायती माल पर धरना धरते समय तुम्हें बन्दी बनाया जाये, पुलिस तुम पर लाठी चार्ज करे! लेकिन तुम किसी भी दशा में पग पीछे न हटाना।

देवियाँ— बढ़ा हुआ पग कभी पीछे नहीं हटेगा। हम विदेशी माल का बहिष्कार करके ही रहेंगी।

युगपुरुष— जिस देश के निवासी दूसरे देशों पर आश्रित नहीं रहते वे कभी दास हो ही नहीं सकते। जिस देश में अपना अन्न, अपना वस्त्र और अपनी भाषा है वह देश सब देशों में राजा है। सच्ची स्वतन्त्रता वही है जिसमें किसी भी प्रकार का दासत्व नहीं। यदि गुलामी से दूर होना है तो आत्मिक दासता छोड़नी होगी।

कामना— हम आत्मा से स्वतन्त्र हैं महापुरुष! स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

युगपुरुष— तो तुम भारत माता की जय बोलती हुई सत्याग्रह के लिए प्रस्थान करो!

(कामना झण्डा लेकर आगे आगे और शेष सब पीछे पीछे नारे लगाती हुई और जय बोलती हुई प्रस्थान करती हैं।)

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(दो तीन क्रान्तिकारियों के साथ आज़ाद बुखार से पीड़ित आते हैं ।)

आज़ाद— यह तुमने क्या सुनाया साथी ! वीर यतीन्द्रनाथ दास इकसठ दिन की भूख हड़ताल करके वीर गति को प्राप्त हो गये। बंगकेसरी ! तुम धन्य हो ! देवी स्वतन्त्रते ! कितने बलिदान लोगी तुम ! देश के कर्णधार सींकचों में बन्द हैं। शहीदों के शोणित से ज़मीन लाल हो गई ! लेकिन दासता की कड़ियाँ नहीं टूटीं ।

क्रान्तिकारी— बेड़ियाँ टूटेंगी और अवश्य टूटेंगी। पर इस समय आप शान्त हो जाइये। बुखार से आपका शरीर तप रहा है। इतने तेज़ बुखार में तो आपको गुहा में विश्राम करना चाहिये ।

आज़ाद— विश्राम ! आज़ाद के लिये विश्राम या तो संग्रामभूमि में है या मृत्यु की गोद में, इसके अतिरिक्त यदि कहीं है तो वह स्वतन्त्र भारत में ।

(बुखार की तेज़ी से पैर लड़खड़ाने लगते हैं। साथी सँभालने का यत्न करते हैं। आज़ाद लड़खड़ाते हुए लेट जाते हैं ।)

आज़ाद— आपत्तियों के पहाड़ एक साथ ही टूटना चाहते हैं। ईश्वर भी न जाने निरीह को ही क्यों सताता है !

क्रान्तिकारी— यह स्थान खतरे से खाली नहीं है सरदार ! किसी भी प्रकार गुहा तक चले चलो ।

आज़ाद— ताप तो क्या, साहस तो मृत्यु से भी नहीं छूट सकता ! पर न जाने पैरों को ज़मीन ने क्यों पकड़ लिया है ! एक पग भी नहीं चला जाता। तुम जाओ साथी ! मेरे साथ रहने से तुम्हें भी फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम चले जाओ, और भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए जीवन के अन्तिम श्वास तक लड़ते रहो।

क्रान्तिकारी— चाहे प्राण चले जायें पर हम आपको इस दशा में छोड़ कर नहीं जायेंगे !

आज़ाद—भावुकता में कर्त्तव्य को न भूलो, तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हो।

क्रान्तिकारी— हम आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर रहे सरदार ! हम गुहा में चलते हैं, पर आपको साथ लेकर। आप अन्धे बनकर हमारे कन्धों पर हाथ रख लीजिये, हम सहारा देकर आपको ले चलेंगे ।

(साथी शेखर को उठाते हैं। शेखर अन्धे बनकर साथियों के कन्धों के सहारे चले जाते हैं। इधर वे जाते हैं उधर से सशस्त्र पुलिस आती है।)

एस. पी.— हमको रिपोर्ट मिली है कि इधर से ही आज़ाद गया है। (सिपाहियों की ओर देखता हुआ) तुम इधर जाओ, तुम इधर जाओ, तुम उधर जाओ, और तुम उस तरफ जाओ।

(सिपाही चारों तरफ को जाते हैं।)

एस. पी.— दुनिया भर के जंगल छान डाले, पर वह यमराज पकड़ा ही नहीं जाता ! न जाने कहाँ छिपे रहते हैं, पलक मारते ही सामने होते हैं और पलक मारते ही न जाने कहाँ चले जाते हैं। (नेपथ्य में गोली चलने की आवाज़ होती है। घायलों के कराहने का स्वर होता है। एक घायल सिपाही दौड़ा हुआ आता है।)

सिपाही— हुज़ूर हमारे सब सिपाही मारे गये! क्रान्तिकारियों की गुहा का पता चल गया है। ढाके के जङ्गल के पीछे एक टेढ़ा मेढ़ा पहाड़ है। उसी पहाड़ की गुफा में भारत माँ दल का अड्डा है। पर सरकार वहाँ पूरे बल से आक्रमण करिये। क्रान्तिकारियों के पास बम, बन्दूकें और न जाने क्या क्या अस्त्र शस्त्र हैं कि शत्रु गुहा से दो सौ कदम पहले ही मर जाता है।

एस. पी.— तुम्हारी वीरता से हम बहुत खुश हुए सिपाही! अब जब तक तुम ठीक होओ तब तक के लिए तुम्हारी छुट्टी! तुम विश्राम करो, मैं उन डाकुओं के अड्डे पर पहुंचता हूँ। (कहता हुआ गुस्से से चला जाता है।)

दृश्य समाप्त

पाँचवां दृश्य

(बीहड़ बन में पहाड़ों के मध्य एक गुहा है; जिसके द्वार पर क्रान्तिकारी पहरे पर सतर्क हैं। गुहा के अन्दर क्रान्तिकारी दल का अड्डा है। नेपथ्य से एक क्रान्तिकारी घबराया हुआ आता है।)

आगन्तुक क्रान्तिकारी— सावधान साथी! पुलिस को हमारे स्थान का पता चल गया है। पुलिस में जो हमारे गुप्तचर हैं उनकी सूचना है कि पुलिस पूरे दल बल से पहाड़ी पर हमला करने के लिये चल दी है।

प्रहरी— तो क्या खतरे की घण्टी बजा दूँ ?

आगन्तुक— तुरन्त तोपों का सामना करने के लिये तैयार हो जाओ! पुलिस कुछ देर में आने ही वाली है।

(प्रहरी खतरे की घण्टी बजाता है, गुहा से क्रान्तिकारी बन्दूकें और पिस्तौलें लिये हुए निकलते हैं। आज़ाद हाथ में भरी हुई पिस्तौल लिये गुस्से में गुहा से निकलते हुए—)

आज़ाद— साथियो! आज तुम्हारी परीक्षा का समय है। पुलिस का एक भी आदमी यदि जीवित चला गया तो तुम्हारी गरिम गर्द में मिल जायेगी।

(क्रान्तिकारी एक संगठित स्वर में—)

— 'एक एक टोडी बच्चे को बता देंगे कि स्वतन्त्रता के परवानों में कितनी आग होती है। आज इन पहाड़ों पर शत्रुओं के शव सड़ते दिखाई देंगे। चील, कौवे और गिद्धों की दावत होगी। भूत और प्रेत गीत गायेंगे।

आज़ाद— तो साथियो ! तुम पहाड़ के इस ऊँचे भाग की आड़ में छिप जाओ, गुहा के द्वार पर मैं खड़ा होता हूँ। जिस समय पुलिस आयेगी मैं गुहा के अन्दर आवाज़ दूँगा—'सावधान ! पुलिस ने धावा बोल दिया है।' पुलिस गुहा के अन्दर घुसेगी, और तभी बस तुम तुरन्त सबको अपनी गोलियों का निशाना बना लेना।

क्रान्तिकारी— लेकिन सरदार ! आप तो पुलिस का प्रथम चरण पड़ते ही गोली के निशाने बन जायेंगे।

आज़ाद— गोली का निशाना बन जाऊँगा तो क्या हुआ ! देश की स्वतन्त्रता के लिए शहीद होने से मुझे लोक में बड़ाई और परलोक में स्वर्ग की प्राप्ति होगी।

क्रान्तिकारी-- तो इस लाभ को पहले मैं चाहता हूँ। अभी स्वर्ग को आपकी आवश्यकता नहीं, अभी भूमि को आपकी वीरता की आवश्यकता है। तुम जाओ सरदार ! पहाड़ी के पीछे उस सड़क के निकट छिप जाओ। यदि हार हुई तो वहाँ से आप सरलता से भाग सकते हैं। गुहा के द्वार पर मैं रहूँगा।

(कहता हुआ क्रान्तिकारी गुहा के द्वार पर सतर्कता से खड़ा हो जाता है।)

आज़ाद-- भारत माँ के वीर पुजारी, तुम धन्य हो। अब भारत को कोई भी शक्ति गुलाम नहीं रख सकती।

(कहते हुए बटिया के किनारे की एक पहाड़ी के पीछे छिप जाते हैं। शेष सब क्रान्तिकारी भी जहाँ तहाँ छिप जाते हैं। अङ्गरेज़ और भारतीय सशस्त्र पुलिस बड़ी संख्या में आती है। गुहा के द्वार पर खड़ा हुआ प्रहरी खतरे की घण्टी ज़ोर से बजाता है और चिल्ला चिल्ला कर कहता है।)

— 'सावधान, पुलिस आ गई है, सावधान ! सावधान साथियो ! सावधान !'

(अङ्गरेज़ अफसर प्रहरी क्रान्तिकारी पर गोली चलाता है। उत्तर में प्रहरी भी गोली चलाकर दो तीन पुलिस वालों को समाप्त कर देता है। पुलिस गोली चलाती हुई आवेश में गुफा के अन्दर घुसती है। इधर क्रान्तिकारी पुलिस पर दनादन गोलियाँ चलाते हैं। भीषण रक्तपात होता है। अन्त में एक पुलिस अधिकारी के साथ बची हुई पुलिस लाशों के बीच घूमती हुई।)

पुलिस अधिकारी— भारत माँ के सपूतो ! तुम्हारी वीरता की कहानी चाँद और सूरज की ज्योति से लिखी जायेगी। हम हज़ार होकर भी तुम में से एक को भी न पकड़ पाये। (बची हुई पुलिस की ओर देखता हुआ) आज़ाद के शव का कहीं पता चला !

(सहसा पहाड़ी के पीछे से निकल कर भागता हुआ आज़ाद)

— 'ढूँढने की आवश्यकता नहीं, पकड़ सकते हो तो पकड़ो !'

(गोली चलाता हुआ भागता है। पुलिस पीछे पीछे दौड़ती है।)

दृश्य समाप्त

छठा दृश्य

(युगपुरुष मोहनदास की कुटी, घुटनों तक की खादी की धोती बांधे, चादर ओढ़े युगपुरुष कुटिया का दर्वाज़ा खोलकर बाहर आते हैं ।)

युगपुरुष— राम, राम, राम ! मानव कितना पतित होता जा रहा है। असत्य, घृणा, द्वेष, स्वार्थ, हिंसा ! मनुष्य, तू कहाँ जा रहा है ! क्या तू इसीलिये संसार में आया है कि दूसरे का अधिकार छीने, क्या तू दूसरे को सताने के लिए ही दुनिया में जी रहा है ? हे ईश्वर ! मनुज कितना अज्ञानी हो गया, दूसरे का रक्त पीकर वह अट्टहास करता है !

(पसीने में भीगा हुआ शेखर दौड़कर प्रवेश करता है ।)

शेखर— रक्त पीने के लिए शोणित की प्यासी तलवार अब भी है युग देवता ! उस हत्यारी तलवार के जब तक लोहे से दो टुकड़े नहीं करे जायेंगे तब तक रक्तपान का नंगा नाच बन्द नहीं होगा।

युगपुरुष— शत्रुता मृत्यु का दूसरा नाम है। सच्ची जीत उसी की है जिसने हृदय के पशु को मार दिया।

शेखर— भय के बिना मनुष्य के हृदय का पशु नहीं मरता महापुरुष ! यदि मर सकता है तो आप मेरी रक्षा कीजिये, मैंने आज तक जितने भी खून किये हैं वे सब उन हत्यारों के हैं जो कितने ही निर्दोषों का लहू पी चुके थे। मैंने जो कुछ किया है वह सब देश की स्वतन्त्रता के लिये। अब मैं अकेला हूँ, और पुलिस मेरे पीछे, बताओ मैं क्या करूँ ।

युगपुरुष— एक सच्चे सत्याग्रही की तरह स्वयम् को पुलिस के हवाले कर दो।

शेखर— क्या, क्या जल्लादों के हाथ से मरने के लिये कायर की तरह विदेशी हत्यारों के हाथ में आ जाऊँ? नहीं महात्मा! यह कभी नहीं हो सकता। मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि मैं आज़ाद हूँ और आज़ाद ही मरूँगा। उस दिन मुझ सत्याग्रही पर जो अत्याचार हत्यारों ने किये थे वे तो कोई हिंसक पशु भी नहीं करता। अब तो मैं केवल यही चाहता हूँ कि आप मुझे एक दिन अपनी कुटी में छिपा लें। रात होते ही मैं कहीं चला जाऊँगा।

युगपुरुष— मैं तुम्हें अपने पास रख सकता हूँ, पर यदि तुम अहिंसक होना स्वीकार करो। चाहे तुम्हें मृत्यु का ही आलिंगन क्यों न करना पड़े पर तुम्हें पुलिस के सामने स्वयम् को उपस्थित करना होगा।

शेखर— पुलिस के सामने आऊँगा पर हाथ जोड़कर नहीं, हाथ में पिस्तौल लेकर। जब तक अनेकों हत्यारों के शव अपने हाथों से न कर दूंगा तब तक मृत्यु को अपने निकट नहीं आने दूंगा देवता!

युगपुरुष— तुम्हारे पास तो वीरत्व और आत्मबल की अपार शक्ति है युवक! छोड़ दो प्रतिहिंसा की भावना, और हृदय परिवर्तन का अमर व्रत ले लो।

शेखर— जिनके मुँह खून लग जाता है वे मानवता और प्रेम से नहीं बदला करते। स्वतन्त्रता भीख माँगने से नहीं मिलेगी। स्वतन्त्रता जब कभी भी मिलेगी तब हम जैसे शहीदों के शोणित से ही मिलेगी। स्वतन्त्रता का इतिहास जब कभी लिखा

जायेगा तब उसमें शहीदों का नाम सुनहरी अक्षरों में सबसे ऊपर होगा। अच्छा, अब प्रणाम युगपुरुष! जा रहा हूँ।

(युगपुरुष मौन हो जाते हैं और शेखर चले जाते हैं। सोचते सोचते कुछ देर बाद युगपुरुष कहते हैं।)

— "सिद्धान्त और व्यवहार में कितना बड़ा अन्तर है। सत्य कितना कठोर होता है। अहिंसा जितनी कोमल है उतनी ही निर्मम भी। ममता मनुष्य की ज़िन्दगी है पर आदर्श और ममता में भारी भेद होता है। यह युवक आज़ाद जिसने स्वतन्त्रता के लिये जीवन का प्रत्येक श्वास अर्पण कर दिया आज जीवन के लिये एक कोना भी कहीं नहीं पा रहा। सच है आपत्ति में मनुष्य को उसकी छाया भी छोड़ देती है। हे राम!"

(कहते हुए शान्ति से चले जाते हैं।)

दृश्य समाप्त

सातवाँ दृश्य

(एक बड़ा बाग है, सन्ध्या समय है, चन्द्रशेखर आज़ाद रामनाम का कटिवस्त्र बांधे, अन्टी में कारतूस की पेटी और पिस्तौल कसे आते हैं।)

आज़ाद— अब कहीं ऐसा कोना नहीं जहाँ आज़ाद अपने को इस हत्यारी सरकार से बचा सके। किन्तु कुछ चिन्ता नहीं, मैं अकेला ही आज रुद्र की तरह ताण्डव नृत्य करूँगा। (पिस्तौल निकाल कर) जो भी सामने आयेगा उसी के यह रक्तप्रिया प्राण पी लेगी।

(धमाधम पुलिस अधिकारियों के साथ पुलिस आ जाती है, शेखर एक बड़े पेड़ की आड़ में हो जाते हैं।)

पुलिस अधिकारी— अब बच कर कहाँ जायेगा! बन्दी बना लो इसे।

आज़ाद— आज़ाद को बन्दी बनाने वाली हथकड़ियाँ टूट चुकी हैं।

पुलिस अधिकारी— सिपाहियो! पकड़ लो इसे।

(पुलिस आगे बढ़ना चाहती है।)

आज़ाद— सावधान, जिसने भी पैर बढ़ाया उसी की लाश तड़पती हुई दिखाई देगी।

(पुलिस ठिठकती है।)

पुलिस अधिकारी— कायर कहीं के, आगे बढ़ो!

(पुलिस आगे बढ़ती है। आज़ाद की दनदनाती हुई गोली एक सिपाही के माथे में लगती है। सिपाही, 'हाय!' करता हुआ मर जाता है। पुलिस फिर रुक जाती है।)

पुलिस अधिकारी— रुक क्यों गये, देखते क्या हो, गोली चलाओ।

(पुलिस अन्धाधुन्ध गोली चलाती है। पुलिस की गोलियों से वह पेड़ बिंध जाता है जिसकी आड़ में आज़ाद खड़े थे। पुलिस की गोलियों के उत्तर में आज़ाद भी बचाव करते हुए गोलियाँ चलाते हैं। उनकी पिस्तौल की एक भी गोली खाली नहीं जाती। एक-एक गोली एक-एक सिपाही के प्राण ले लेती है। पुलिस छल से रुख बदलती है।

पुलिस अधिकारी— वाह, आज़ाद वाह! तुम्हारे जैसा सच्चा निशाना तो हमने आज तक किसी की भी पिस्तौल का नहीं देखा! क्या मजाल जो एक भी गोली चूक जाये!

आज़ाद— आपकी प्रशंसा के लिये धन्यवाद!

पुलिस अधिकारी— (आगे बढ़ता हुआ) तो तुम बन्दी होना नहीं चाहते इसलिये लो (कहता हुआ गोली चलाता है। गोली आज़ाद के पैर में लगती है। वे गिर पड़ते हैं। गिरे ही गिरे वे गोली चलाते हैं। गोली पुलिस अधिकारी के सीने में लगती है, कराहता हुआ पुलिस अधिकारी मर जाता है, आज़ाद की गोलियाँ समाप्त हो जाती हैं। पुलिस बन्दूकों और पिस्तौलों से धुआँधार गोलियाँ चलाती है। गोलियों से आज़ाद छलनी छलनी हो जाते हैं, और 'भारत माता की जय' कहते हुए प्राण छोड़ देते हैं।)

दूसरा पुलिस अधिकारी— आज़ाद मर गया, चलो उठाओ इसका शव! मनुष्य क्या शेर था।

सिपाही— सरकार ! जान पड़ता है मक्कर भरे पड़ा है। आगे बढ़ते ही मृत्यु आ जायेगी !

अधिकारी— हो सकता है यह भी !

दूसरा अधिकारी— पर देखते नहीं, शव फूल रहा है, आज़ाद कभी का मर चुका। चलो शव को उठाओ !

(पुलिस डरती हुई आगे बढ़ती है और शव पर चादर डालती है।)

(नेपथ्य में गीत)

जो शहीद होते हैं उनकी यह धरती पूजा करती है।

इस मिट्टी में स्वतन्त्रता के परवानों की राख पड़ी है।
इनके मरने पर आँखों में आँसू भर कर मौत खड़ी है॥
आज़ादो के महासमर का शोणित से इतिहास लिख गये।
मातृभूमि पर मर मिटने का दुनिया को अभ्यास लिख गये॥

स्वतन्त्रता के परवानों को जीवन ज्योति सदा जलती है।
जो शहीद होते हैं उनकी यह धरती पूजा करती है॥

दृश्य समाप्त

अङ्क समाप्त

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(चन्द्रशेखर आज़ाद की चिता जल रही है। गरिमा, शक्ति, इटोनिया और कामना विलाप करती हुई सफेद धोती पहने आती हैं।)

गरिमा— (पगली की तरह) क्या मैंने तुझे इसी लिये पाला था कि अपनी आँखों के सामने ही तेरी चिता जलती हुई देखूँगी। मेरे फूल से लाल, तुझे यह क्या हो गया? तू कहाँ गया, बोलता क्यों नहीं तू? बोल मेरे लाल, देख मैं तेरी माँ रो रही हूँ।

शक्ति— मत रो माँ! भैया के कानों में हमारे रोने की आवाज़ अब नहीं पहुँचती। चुप हो जाओ माँ!

गरिमा— चुप कैसे हो जाऊँ। माँ के सामने जवान बेटे की चिता जल रही हो और वह चुप हो जाये। मेरे सामने हाथों में खून की मेंहदी रचाये कामना विधवा बनी खड़ी हो और मैं मौन हो जाऊँ।

कामना— (फूटकर रोती हुई) हे ईश्वर! तू भी कितना कठोर है! जिसकी आशाओं पर तू वज्रपात करता है उसे जीवन भर रुलाता ही रहता है। अब मेरा संसार में क्या रहा! क्यों न इसी चिता में जल कर शरीर की राख कर डालूँ।

(कहती हुई चिता की ओर लपकती है। सहसा युगपुरुष प्रवेश करते हुए—)

— 'शान्त, बेटी शान्त ! आत्महत्या से बड़ा पाप संसार में कोई नहीं ! मनुष्य सोचता है मर कर उसे शान्ति मिल जायेगी, पर यह उसकी भूल है। शान्ति तो निष्काम कर्म में है। यदि तुम इस प्रकार चिता में जलकर अपने प्राण दे दोगी तो तुम अपने शेखर के साथ अन्याय करोगी। तुम आँसुओं को आँखों में रोक कर उठो और शेखर जो चाहते थे वह पूरा करो। तुम्हारा लक्ष्य मृत्यु नहीं स्वतन्त्रता प्राप्ति है !'

कामना— किन्तु जब हृदय ही टूट जाये तो मनुष्य क्या करे ? मेरे लिये जीवन की आशा मर गई। आँसुओं की राह में मिट्टी की तरह जीकर मैं क्या करूँगी महात्मा !

युगपुरुष— चाहे कितने भी दुःख हों पर मनुष्य को जीना ही चाहिये। मनुष्य का धर्म दुःखों से घबरा कर मरना नहीं है अपितु दुःखों पर जय पाना है।

कामना— आदर्श और व्यवहार में बड़ा अन्तर है महापुरुष ! उपदेश सुनाने और सुनने में बहुत अच्छे लगते हैं पर जीवन उपदेशों की कठोरता पर चल नहीं पाता। जीवन यथार्थ का भक्त होता है। तिल तिल करके जलने से तो एकदम ही आग में जलना अच्छा है।

युगपुरुष— भावुकता में दुर्बल मनुष्य यही सोचता है जो तुम सोच रही हो, भारत की भाग्यवान बेटी ! इधर तुम एक चिता को देख रही हो और तनिक उधर तो देखो।

(युगपुरुष नेपथ्य की ओर संकेत करते हैं। कामना आदि उधर देखती हैं।)

कामना— (चौंक कर आँख मींचती हुई) बस, बस ! अब नहीं देखा जाता। कितने वीभत्स दृश्य हैं ये ! भूख, पीड़ा, वियोग,

अत्याचार ! ठहर जा पापी ! ठहर जा, क्यों तू निरीह भारत माता का माँस काट काट कर खा रहा है ? क्यों तूने कोटि कोटि मनुष्यों को कैद कर रक्खा है। नहीं, मेरा धर्म रोना और मरना नहीं है, मेरा धर्म भारत माता को मुक्त करना है। मेरे स्वामी ने इसी उद्देश्य में अपने प्राण दे दिये ! क्रान्तिदूत ! मैं दुःखातिरेक में पथ भूल गई थी, आपने मुझ भूली हुई को फिर राह दिखा दी।

युगपुरुष— एक समय अर्जुन को भी मोह ने घेर लिया था, पर भूल कर जो सँभलता है वह सफल योद्धा है। भूले बिना मनुष्य को शुद्ध मार्ग नहीं मिलता। पर दुःखों में तपे बिना मानव ज्योतिवन्त नहीं होता।

कामना— वही आँसू आँसू है जो दुखी को देख कर निकलता है।

युगपुरुष— तो गा बेटी ! गली गली में दुखियों के गीत गा जिस से दुनियाँ के आँसू पुँछ सकें !

(कामना सबके साथ गाती है—)

हरो और की पीर नीर पूँछो गीली आँखों का।
मानव ! तेरा धर्म नहीं है रोना और रुलाना।
जीवन का उद्देश्य प्रेम से गिरता पथिक उठाना॥
पग पग पर प्राणी प्राणों की गति को ढूँढ़ रहा है।
लक्ष्य मिल गया लेकिन राही यति को ढूँढ़ रहा है॥
पवन सहारा बने राह में कटी हुई पाँखों का।
हरो और की पीर नीर पूँछो गीली आँखों का॥

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(हाथों में जलती मशाल लिये क्रुद्ध क्रान्तिकारी युवक आते हैं।)

एक युवक— खून का बदला खून, भारत माता की शपथ है हमको, या तो प्राण देंगे या शत्रु के प्राण ले लेंगे।

दूसरा युवक— नोच डालो उन हत्यारों को जो निर्दोषों के रक्त से लाल हो रहे हैं। बेकार कर दो विदेशी राज्य का पुर्जा पुर्जा।

तीसरा युवक— विदेशी राज्य की मशीन बेकार कर दो, पटरियाँ उखाड़ दो, अंग्रेजी दफ्तरों में आग लगा दो, रेल, तार, डाकखाने सब बेकार कर दो।

चौथा युवक— इससे भी एक क़दम आगे बढ़ो, सेना में विद्रोह की आग भड़का दो। जब तक फौज में विद्रोह खड़ा नहीं होगा तब तक विदेशी सत्ता की आँखें नहीं खुल सकतीं।

पाँचवां युवक— सर हथेली पर रखकर निकल पड़े हैं, इस बार या तो हम नहीं रहेंगे या दासता नहीं रहेगी।

पहला युवक— तो फिर किसी निश्चित संगठन के साथ पग बढ़ाओ।

दूसरा युवक— यही तो वह स्थान है, जहाँ हम से मेजर जनरल ने मिलने को कहा था, पर जान पड़ता है डर गया जो अब तक नहीं आया। सच है कागज़ के टुकड़ों की गुलामी भी बड़ी विषैली होती है।

(सामने से मेजर जनरल हिम्मत सिंह आता हुआ—) जय हिन्द !

पहला युवक— जय हिन्द ! तुम आ गये हिम्मतसिंह, कहो क्या इरादा है ?

हिम्मतसिंह— इरादा क्या, हम बगावत के लिये तैयार हैं। हम ही नहीं, हमारे साथ कैप्टिन नागर, कर्नल मोहनसिंह और जनरल अकबर खाँ भी बगावत को तैयार हैं।

पहला युवक— तो फिर भारत माता की जय, इस बार जय निश्चित है।

हिम्मतसिंह— तो फिर विद्रोह किस प्रकार शुरू हो ? क्या आमने सामने का खुला युद्ध छेड़ दिया जाये ?

पहला युवक— सन् सत्तावन के विद्रोह की तरह सेना से विद्रोह की एक भयानक आग उठेगी। जहाँ भी जो विदेशी हमारे मार्ग में आयेगा उसी को मौत के घाट उतार दिया जायेगा। पर जनरल साहब ! आपको अपने ऊपर और अपने साथियों पर विश्वास तो है न ?

हिम्मतसिंह— मैं तलवार की शपथ खाकर घर से निकला हूँ कि आज़ादी की लड़ाई में हमारे सिपाही पीछे नहीं रह सकते।

दूसरा युवक— इस समय कितनी सेना और कितने शस्त्र हमारे अधिकार में हैं ?

हिम्मतसिंह— पाँच सौ गोरखा सिपाही, एक हज़ार सिक्ख बटालियन, पाँच सौ पठान, और एक हज़ार जाट सर पर कफ़न बाँध कर तैयार हैं।

पहला युवक— इसी प्रकार अन्य ज़िलों में भी हमारे साथी कटिबद्ध हैं। जय महाचण्डी ! हाथ मिलाओ जनरल साहब ! यदि आज़ाद हुए तो स्वतन्त्र भारत में फिर गले मिलेंगे और यदि

वीर गति को प्राप्त हो गये तो स्वतन्त्रता के इतिहास में हमारा नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा।

हिम्मतसिंह-- (हाथ मिलाता हुआ) जब कल सारा संसार नींद में पड़ा स्वप्न देख रहा होगा, उषा अपनी खूनी चादर तानकर हत्यारों को सदा के लिए सुला देगी।

पहला युवक-- हाँ, जब रात की काली चादर में डूबी हुई दुनियाँ सवेरे की मीठी हवा में करवटें बदल रही होगी उस समय आकाश में बिजलियाँ चमकेंगी, धरती पर भूकम्प आयेगा, दिशाओं से लाल लाल लपटें उठेंगी, प्रलय का तूफान लेकर देश के नवयुवक उबल उठेंगे। क्रान्ति, क्रान्ति के प्रचंड शब्द से शत्रुओं के परदे फट जायेंगे।

दूसरा युवक-- शहीदों का रक्त शोणित की प्यास बनकर गली गली में घूमता फिरेगा। फाँसी पर चढ़ने वाले देशभक्तों के खून का प्रतिशोध अत्याचारियों के सर पर मौत का ताण्डव नृत्य करेगा।

हिम्मतसिंह— जय सतगुरु की, आज़ादी की लड़ाई में हम अपना खून चढ़ा देंगे। एक एक शहीद की मौत के बदले हम सौ सौ सर काट देंगे। बन्दा बैरागी की तरह हम देश के लिए कुर्बान हो जायेंगे।

पहला युवक-- तो अब चलना चाहिए, आज रात को अपने मोर्चे लगा दो। प्रातः रात की काली शक्ल पर रक्त से स्वतन्त्रता की लड़ाई का वह इतिहास लिखा जायेगा, जिसे प्रलय का पानी भी न धो सकेगा।

दूसरा युवक-- शीघ्र ही नौ दो ग्यारह हो जाओ। (सामने की ओर ध्यान से देखता हुआ) अभी कोई व्यक्ति उस पेड़ के पीछे से

भाग कर गया है। जान पड़ता है वह कोई शत्रु का गुप्तचर था। यहाँ अब अधिक ठहरना ख़तरे से खाली नहीं है। हो सकता है वह दल बल सहित पुलिस को ले आये।

हिम्मतसिंह— हमको चलना ही चाहिये।

पहला युवक— तो फिर चलो। (कहते हुए सब चले जाते हैं।)

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(स्वतन्त्र भारत सेना का एक बड़ा शिविर है, चारों ओर डेरे गड़े हुए हैं। जहाँ तहाँ तोपें खड़ी हैं। बन्दूक लिए सैनिक पहरों पर सतर्क हैं। काले बादल घिरे हुए हैं, कभी कभी बिजली कड़क उठती है। क्रांतिकारी युवकों के साथ हिम्मत सिंह बातें करते आते हैं। सैनिक उनको फौजी अभिवादन करते हैं।)

हिम्मत सिंह— आज विदेशियों को भी पता चल जायेगा कि स्वतंत्रता की आग जब भड़कती है तो लुटेरों को भस्म किये बिना शान्त नहीं होती।

पहला युवक— मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये आज कोटि कोटि वीरों ने सर हथेली पर रख लिये हैं।

हिम्मत सिंह— आज़ाद हिन्द फौज के वीर सिपाहियो! आज तुम्हें रक्त से धरती पर एक नया इतिहास लिखना है। देखना पैर डग-मगा न जायें। आग हो या तूफ़ान, तुम्हारा पग पीछे न हटे।

सब सैनिक— हम मौत को भी आज मार कर मनुष्य को सदा के लिये अमर कर देंगे। हम अमर हैं, वीर सिपाही अमर होते हैं।

हिम्मत सिंह— मौत या आज़ादी, दो में से एक ही वस्तु तुम्हें मिलनी है।

सिपाही— एक सिपाही को और क्या चाहिये!

पहला युवक— क्या बात है हिम्मत सिंह जी, कर्नल मोहन सिंह अभी तक नहीं आये?

हिम्मत सिंह— (हाथ में बंधी घड़ी की तरफ देखता हुआ) समझ में नहीं आया अभी तक क्यों नहीं आये। समय तो हो लिया, और अकबर खाँ भी नहीं आये।

(अकबर खाँ घबराये हुए आते हैं।)

अकबर खाँ— गज़ब हो गया हिम्मतसिंह जी ! हमारा सारा भेद खुल गया। कर्नल मोहनसिंह ने हमको धोका दे दिया।

हिम्मत सिंह— (चौंक कर) क्या !

अकबर खाँ— हाँ सरदार ! मुझे उस पर पहिले से ही शक था। वह बड़ा लोभी और क्षण क्षण में बदल जाने वाला इन्सान है। उसकी ज़बान का यकीन कर हमने भारी भूल की।

पहला युवक— भूल तो हो गई, पर अब क्या करें।

हिम्मत सिंह— यही तो मैं भी सोच रहा हूँ।

अकबर खाँ— सोचने के लिये अधिक वक्त नहीं है। हो सकता है भेद खुल जाने से यहीं कोई नया गुल खिल जाये।

(वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि बड़ी संख्या में शत्रु सेना आ धमकती है। मोहन सिंह और अर्विन साथ होते हैं।)

हिम्मत सिंह— (मोहन सिंह को देखते ही) दगाबाज़, गद्दार ! तुझ से तो कुत्ता ही अच्छा है, वह जिसके टुकड़े खाता है उसका वफादार तो रहता है।

अर्विन— और तुम जिसके टुकड़े खाते हो उसी स्वामी की गर्दन पर छुरा चलाते हो।

हिम्मत सिंह— कौन स्वामी ! किसका स्वामी !! तुम हमारे नौकर होकर हमारे ही स्वामी बनते हो ! हमारे धन से, हमारे अन्न से

तुम्हारा पेट पलता है, और तुम हमें ही फाँसी पर चढ़ाते हो, हमें ही तोपों से बाँध बाँध कर उड़ाते हो। ये जेलें, ये फाँसियाँ, ये तोपें, ये बन्दूकें, सब तुमने देशभक्तों के लिये सजाई हुई हैं, पर अब तुम्हारी जल्लादी नहीं चल सकती। यह देश हमारा है। तुम सकुशल हमारा देश छोड़ दो, नहीं तो इन जेलों में तुम्हें बन्द किया जायेगा, इन फाँसियों पर तुम्हें लटकायेंगे, इन तोपों और बन्दूकों का मुँह तुम्हारी तरफ होगा।

अर्विन— (गुस्से से दाँत पीसता हुआ) जान पड़ता है तुम्हारी मौत तुम्हें बुला रही है।

युवक— मौत तो तुम्हें आनी है, हम तो कभी मरते ही नहीं, मृत्युञ्जय हैं।

मोहनसिंह— हुज़ूर ! ये ऐसे नहीं मानेंगे। लातों के देव बातों से नहीं माना करते। इन सबको कैद कर लो !

हिम्मतसिंह—कायर, कमीने ! कैद कर लो, है किसी में इतनी हिम्मत।

अर्विन— हिम्मत का पता अभी चला जाता है हिम्मतसिंह ! (अपनी फौज की तरफ देखता हुआ) पकड़ लो इन सबको।

(अंग्रेज़ी फौज आगे बढ़ती है। उत्तर में हिम्मतसिंह के सिपाही भी अस्त्र शस्त्र तान लेते हैं। दोनों ओर से घोर युद्ध होता है। कितने ही मर जाते हैं, कितने ही घायल होते हैं। लड़ती हुई हिम्मतसिंह की सेना अंग्रेज़ी फौज को भगाने लगती है।)

हिम्मतसिंह— बढ़े चलो वीर सिपाहियो ! तुम्हारी वीरता के सामने ये गीदड़ कितनी देर ठहर सकते हैं।

(इतने में दूसरी ओर से हिन्दुस्तानी फौज आकर हिम्मतसिह की सेना पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाने लगती है। हिम्मतसिंह की काफी

सेना खप जाती है। शेष सिपाहियों के पास गोला बारूद समाप्त हो जाता है। अंग्रेज़ी फौज हिम्मत सिंह, क्रान्तिकारी युवक, तथा शेष सैनिकों को बन्दी बना लेती है।)

अर्विन— (अट्टहास करता हुआ) कहिये हिम्मत सिंह जी! कहाँ है अब आपकी हिम्मत! अब कौन जेल जायेगा, कौन फाँसी पर चढ़ेगा?

हिम्मत सिंह— जब घर का दीपक ही घर में आग लगाये तो घर जलने से कैसे बच सकता है। तुम मुट्ठी भर अङ्गरेज़ों की हिम्मत सिंह को पकड़ने को क्या हिम्मत हो सकती थी। मेरी हिम्मत के कारनामे तो तुम्हारे इतिहास में लिखे हुए हैं। मैंने ही तुम्हें बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ जीत कर दी हैं! पर धोखे से तो शेर भी पिंजरे में पड़ ही जाता है।

मोहन सिंह— हुजूर! इन बागियों को फाँसी पर लटकाया जाये, या यहीं गोलियों से उड़ा दिया जाये।

हिम्मत सिंह— कल जब स्वतन्त्र भारत में तुम से पूछा जायेगा कि तुम ही वे पापी हो जो देशभक्तों को फाँसी पर चढ़ाते थे तो क्या उत्तर दोगे?

अर्विन— क्यों, क्या मौत सामने देखते ही गिड़गिड़ाने लगे। पर हम खूनी नहीं हैं। (सिपाहियों की तरफ देखता हुआ) इनको ले चलो, खुली अदालत में इनका फैसला होगा।

(हिम्मतसिंह आदि को बन्दी बनाकर ले जाते हैं। धीरे धीरे पर्दा गिरता है।)

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(गोरांगी और अर्विन व्यग्र से आते हैं।)

अर्विन— अब यह आग बुझाने से नहीं बुझ सकती, कोने कोने में स्वतन्त्रता की ज्वाला धधक उठी है, शहीदों के रक्त और युगपुरुष की आवाज़ से सारा भारत जाग उठा !

गोरांगी— हर हिन्दुस्तानी के हृदय में हमारे लिये घोर घृणा है।

अर्विन— घृणा ही नहीं, उनके हृदय में प्रतिशोध की भयंकर आग धधक उठी है। समय रहते या तो हमें भारत छोड़ना होगा या भारत की मिट्टी में हमारी मिट्टी मिल जायेगी।

(नेपथ्य से तुमुल घोष उठते— 'अङ्गरेज़ों भारत छोड़ो, हिन्दुस्तान हमारा है, भारत माता की जय ! भारत माता की जय !')

गोरांगी— मुझे डर लग रहा है, साहब ! जल्दी चलो यहाँ से, कहीं आज़ाद जैसा कोई पिस्तौल लेकर इधर ही आ गया तो।

(नगरसेठ नौनिहालसिंह के साथ चिम्मन और मिच्चन तिरंगा झण्डा लिये प्रवेश करते हैं—)

मिच्चन— तो कुछ नहीं मेम साहब ! अब तक हम जेल की हवा खाते थे अब तुम सींकचों में कबूतर की तरह कैद रहना, क्यों चिम्मन !

चिम्मन— सच है, मिच्चन ! मेम साहब ने बहुत मुर्गे खाये हैं। अब ज़रा बन्दीघर में चक्की पीस पीस कर भी तो खाकर देखेंगी।

अर्विन— डेम फूल ! हम तुमको फाँसी पर चढ़ा देगा।

नगरसेठ— रस्सियाँ जल गईं, बल अभी भी बाकी हैं। साहब बहादुर! घबराइये नहीं, क्रान्तिकारी पिस्तौल लेकर इधर ही आ रहे हैं, बड़े प्रेम से फाँसी चढ़ाना उनको।

अर्विन— (घबरा कर) क्या क्रान्तिकारी आ रहे हैं। मेम साहब! भागो जल्दी।

मिच्चन— भागते कहाँ हो, तनिक हमें फाँसी तो चढ़ाते जाओ।

चिम्मन— चाय लाऊँ मेम साहब!

(अर्विन और गोरांगी मुँह बनाते हुए भयभीत से चले जाते हैं। नगरसेठ, चिम्मन और मिच्चन ठहाका मार कर हँसते हैं।)

चिम्मन— क्यों मिच्चन कैसी रही?

मिच्चन— बिना मिर्च के मज़ा आ गया।

नगरसेठ— तो इसी बात पर बोलो— भारत माता की—

सब— जय!

नगरसेठ— तो खुशी में कोई रंग जमाना चाहिये।

मिच्चन— लो अभी जमता है। (चिम्मन की तरफ देखते हुए) चिम्मन, जा जल्दी, सेठ जी के घर कह आ कि सेठ जी सत्याग्रह में जेल चले गये, उनको फाँसी हो गई, उठावनी हो चुकी, तिरामी होने वाली है, सेठ जी नर्क में पड़े हैं, उनके पास खाने को नहीं है, पहनने को नहीं है, मोटर के बिना वे पैदल चलते हैं, तुम सेठ जी का सारा माल मोटर में भर मुझ यमराज के बेटे को दान कर दो, नहीं तो सेठ जी भूत बनकर तुम सबको खा जायेंगे।

चिम्मन— (रोता हुआ) 'क्या सेठ जी मर गये, हे राम! अरे मेरे बछड़े, ओ मेरे बूढ़े बालम! (आपा पीटते हुए) हाय! हाय!

हाय ! हाय ! बूढ़े हम न हुए ! हाय बूढ़े हम न हुए । हाय ! हाय ! बूढ़े तुही अमीर !'

मिच्चन— अरे, यह क्या करता है ?

नगरसेठ— अरे मैं तो जिन्दा हूँ।

चिम्मन— (नगरसेठ को टटोलता हुआ चौंक कर) अरे मिच्चन ! भाग यहाँ से, सेठ जी मर कर भूत हो गये !

मिच्चन— अजी चिम्मन लाल जी ! सेठ जी भूत नहीं हैं, वे मर कर ज़िन्दा हो गये हैं।

चिम्मन— तो मैं भी अपना रोना पीटना वापिस लेता हूँ !

मिच्चन— रोना पीटना तो पीछे वापिस होगा, अब पहले जेलखाने के लिए तैयार हो जाओ, पुलिस पकड़ने आ रही है।

चिम्मन— पुलिस, पुलिस हमारा क्या कर सकती है, कलक्टर मेरे बाप का बाबा, एस. पी. मेरे साले का सुसर है, डिप्टी साहब मेरी मेम का मामा हैं, फिर किसकी ताकत है जो हमको पकड़ पाये।

मिच्चन— साले, बहनोई, चाचा, ताऊ, मामा और फूफा का अभी पता चल जाना है ! लो वे मामा जी आ रहे हैं।

चिम्मन—आने दो !

(पुलिस अकड़ती हुई आती है)

नगरसेठ— सरकार धूप में चली आ रही हैं, तभी तो बाल सफ़ेद हो गये ।

थानेदार— बाल सफ़ेद हो गये तो क्या हुआ, दिल तो जवान है।

चिम्मन— दिल का मुरब्बा लाऊँ दरोगा जी !

थानेदार— दिल का मुरब्बा क्या होता है ?

मिच्चन— यही कुछ मिठाई के लिये पैसे वैसे ।

थानेदार— ख़बरदार, हम सच्चे सिपाही हैं, घूस वूस नहीं लेते हैं, चलो जल्दी हम तुम सब को जेलखाने ले चलेंगे। तुम्हारे बेंतें लगेंगी।

चिम्मन— अन्ततोगत्वा हमारा दोष दारोगा जी !

थानेदार— तुमने सरकार के विरुद्ध चन्दा दिया, आज़ादी का झंडा उठाया, जनता को भड़काते हो ।

मिच्चन— हमने चन्दा दिया, हमने झंडा उठाया, लेकिन हमारी माँ के भाई दारोगा जी ! अर्थात् यहाँ हमारे मामा जी ! तुम भात देने क्यों आये हो !

चिम्मन— हाँ वे दारोगा जी ! तुम तो हमारी होने वाली बहू के भैया हो, तुम ये क्या हरकत करते हो ।

दारोगा— (सिपाहियों की तरफ देखते हुए) ये सब बदमाश मालूम होते हैं, बाँध लो इनको । (सिपाही आगे बढ़ते हैं ।)

चिम्मन— खबरदार, सिपाहीराज ! यदि एक भी पैर बढ़ाया तो भगवान शंकर अपना तीसरा नेत्र खोल लेंगे ।

मिच्चन— (अपनी जेब से एक गेंद निकालता हुआ) देखा है यह बम का गोला ! एटम, उद्जन, नाशक, सब का चचा है। यह चन्द्रशेखर आज़ाद शहीद होने से पहले मुझे दे गये थे, और कह गये थे— 'इससे सब पुलिस वाले इस तरह मर जायेंगे कि उनके खानदान में फिर कोई पुलिसवाला ही पैदा न होगा ।

(पुलिस वाले बम देखते ही पीछे हटते हैं ।)

चिम्मन— देखते क्या हो मिच्चनलाल जी ! चलाओ अपना बम इन लाल खोपड़ियों पर ।

मिच्चन— (गेंद पुलिस की ओर फेंकता हुआ) जा मेरी एटम की माँ, इन सब पुलिस वालों को भगाकर वापिस आजा।

(गेंद एक के सर से गदका खाकर वापिस आ जाती है। पुलिस डर कर भाग जाती है।)

नगरसेठ— जय भारत माता !

मिच्चन— चलो चिम्मन जी ! मामा जी तो भात देकर चले गये, अब हम सुसराल चलते हैं।

चिम्मन— हमारी सुसराल तो जेलखाने में है, चलना हो तो तैयार हो जाओ।

मिच्चन— (झण्डा उठा कर) तैयार हैं।

(गाता है।)

डण्डे खाओ डण्डे खाओ डण्डे खाओ जी।
सिर मुँडवाओ सिर मुँडवाओ सिर मुँडवाओ जी॥

खोपड़ी के बाल उड़ जायें भले ही यार !
किन्तु तुम करते रहो बस लीडरी से प्यार।
सोख दोगे तुम किसी दिन आँसुओं की धार॥

झण्डे लाओ झण्डे लाओ झण्डे लाओ जी।
डण्डे खाओ डण्डे खाओ डण्डे खाओ जी॥

चिम्मन— अरे तानसेन जी ! यह क्या कौआ तान छेड़ दी, बस बस, बन्द करो यह भैरवी राग !

मिच्चन — यह भैरवी राग नहीं, विहाग राग है, चिम्मन जी !

चिम्मन— अरे कुछ जानते भी हो उस्तादों के उस्ताद, यह राग गधा राग है।

मिच्चन— देखो जी चिम्मन लाल जी ! गाली दोगे तो लड़ाई हो जायेगी जी, तुम मुझे गधा बताते हो।

चिम्मन— गधा कोई बुरा जानवर तो नहीं होता है तानसेन जी ! यदि गधा न होता तो 'रावण' अपना बाप किसे बनाता।

मिच्चन— तो तू मुझे गधा कहे ही जायेगा।

चिम्मन— मैं तुझे लक्षणा काव्य से सुशोभित करता हूँ और तू बुरा मानता है। मैंने तुझे सीधा मूर्ख न कहकर गधा कह दिया तो क्या बुरा करा।

मिच्चन— अच्छा, तो तू मुझे मूर्ख भी बनाने लगा, ले तो देख मेरा ऐंटम !

(कहता हुआ आस्तीन चढ़ाने लगता है।)

चिम्मन— बस बस, हम डर गये, रहने दो अपनी पहलवानी ! हम तो प्रेम में गधा कह रहे हैं और मिच्चन लाल जी अकड़े ही जा रहे हैं। हम स्वतन्त्र होने वाले हैं, इस हर्ष में हमें मद चढ़ रहा है, हम आपे में नहीं हैं, तुम अपनी अकड़ मत दिखाओ, नहीं तो हम मिनिस्टर बनकर तुम्हें चपरासी भी नहीं बनायेंगे।

मिच्चन— (खिलखिला कर हँसता हुआ) जान पड़ता है खोपड़ी के पुर्जे कुछ ढीले हो गये।

नगरसेठ— कहीं तुम दोनों अपने अपने सिर फोड़कर फौजदारी में मुक़द्मा मत कर बैठना, ऐसा न हो मुझे गवाही में जाना पड़े।

चिम्मन— (प्रेम से मिच्चन की कौली भरता हुआ) आओ मेरे प्यारे! प्रेम से गले मिल लें, व्यर्थ मुक़दमेबाज़ी में क्या रक्खा है।

मिच्चन—कहते तो ठीक हो मित्र चिम्मन! कौन लड़े और किससे लड़े। चलो सेठ जी, नहीं लड़ते। घर चलो और आज़ादी की खुशी में रसगुल्ले खिला दो।

नगरसेठ—चलो, तुम भी क्या याद रक्खोगे कि किसी सेठ से मित्रता हुई थी। स्वतन्त्रता की खुशी में रसगुल्ले भी खाओ और रस भी पियो।

(गले मिलते हुए चले जाते हैं)

दृश्य समाप्त

पाँचवाँ दृश्य

(एक बड़े सज्जित राजकीय कक्ष में कुछ अङ्गरेज़ अधिकारियों के साथ अर्विन और गौरांगी कुर्सियों पर बैठे हैं।)

अर्विन— हर ओर से 'भारत छोड़ो' की आवाज़ आ रही है, दमन से अब हिन्दुस्तान को गुलाम नहीं रख सकते। चारों ओर ऊधम मच रहा है। डाकखानों में आग, रेल की पटरियों का तोड़ना, सरकारी कार्यालयों को फूँक डालना, सरकारी सहयोगियों की हत्या! ऐसी ही दशा में यदि कुछ दिन दमन से और राज्य किया तो वह दिन दूर नहीं जब हम में से एक भी अपने घर जीवित नहीं जा सकेगा।

गौरांगी— अब एक भी भारतीय हमारा गुलाम रहने को तैयार नहीं है।

(एक सिपाही एक पर्चा हाथ में लिये हुए आता है।)

सिपाही— सरकार! आज रात को हर दीवार पर ये पर्चे लगे हुए मिले हैं। इनमें लिखा है, यदि हमारे नेताओं को मुक्त नहीं करा तो हम एक एक सरकारी अफसर को ज़िन्दा जला देंगे। जेलों के दर्वाज़े खोल दो, हमारे नेताओं को छोड़ो, विदेशियो! भारत से चले जाओ!

गौरांगी— मैं कहती हूँ अब भारत छोड़ने में देर नहीं करनी चाहिये।

अर्विन— शान्ति से भारत छोड़ कर हम हिन्दुस्तान को अपना दोस्त

बना सकते हैं, शत्रुता न करके मैत्री से दोनों देशों को लाभ हो सकता है।

एक अंग्रेज़— ठीक कहते हैं सरकार !

दूसरा अंग्रेज़— मैं तो कब से यही सोच रहा था।

तीसरा अंग्रेज़— शुभ काम में देर कैसी ?

अर्विन— अब देर का क्या काम है, चलें [illegible]न छोड़ने से पहले बार बार यह सोचना पड़ता है कि कहीं हमारे बाद भारत में पशुता का नंगा नाच न हो, कहीं ये भारतीय आपस में ही कट कट कर न मर जायें।

गौरांगी— कट कट कर मरेंगे तो अच्छा तो है, हमें याद कर कर के रोयेंगे तो !

अर्विन— मेरी राय में हिन्दुस्तान दो टुकड़ों में स्वतन्त्र करना चाहिये। एक टुकड़ा हिन्दुओं को सौंप दें और दूसरा मुसलमानों को !

गौरांगी— बिल्कुल ठीक है, फिर देखेंगे कैसे भारत में शान्ति रहेगी। कैसे रक्तपात रुकेगा। हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होगा किन्तु दोनों ओर से तनी हुई तलवारें आपस का रक्त पीती रहेंगी।

एक अंग्रेज़— तब पता चलेगा कि समुद्र पार के किसी विदेशी ने भारत के साथ कितना उपकार किया था।

अर्विन— तो हम घोषणा कर रहे हैं कि हम भारत छोड़ रहे हैं, जेलों के दर्वाजे खोल दो, सत्याग्रहियों को मुक्त कर दो !

(कहते हुए कुर्सियों से उठकर चले जाते हैं। चिम्मन और मिच्चन हँसते हुए पधारते हैं।)

चिम्मन— भिच्चन भाई !

मिच्चन— हाँ भाई चिम्मन !

चिम्मन— हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो रहा है, अङ्गरेज़ भारत छोड़ रहे हैं, जेलों के दर्वाज़े खुलने वाले हैं, नेतागण छूटेंगे, चलो जल्दी से फूलों की मालायें ले ले कर जेल पर चलें। नेताओं को फूल मालायें पहना पहना कर उनको बता दें कि तुम्हारे सबसे बड़े भक्त हम ही हैं, [illegible] गोरांगां [illegible]शा सेवा से भारत माता स्वतन्त्र हुई है।

मिच्चन— फिर तो हिन्दुस्तान में हमारा ही राज्य होगा, जिसे जो चाहेंगे दिला देंगे।

चिम्मन— तो चलो सेठ जी को भी साथ लेते चलें।

(नगरसेठ आते हुए)

सेठ जी— हम स्वयम् ही तूफान मेल की तरह चले आ रहे हैं।

चिम्मन— तो दावत का प्रबन्ध तो करते आये न ?

सेठ— भट्टी का मुहूर्त करवा आया हूँ, मिठाइयाँ बन रही हैं, शाक बन चुके हैं, कचौरियाँ तैयार हैं, बस आपके जीमने की देर है।

चिम्मन— आप तो स्वयम् समझदार हैं सेठ जी !

मिच्चन— और तुम तो इनसे भी अधिक समझदार हो नारायण !

सेठ जी— क्यों नहीं, क्यों नहीं !

चिम्मन— सेठ जी !

सेठ जी— हाँ चिम्मनलाल !

चिम्मन— मुझे आज्ञा दो कि ये विलायती कुर्सियाँ हिन्दुस्तान से उठा कर अपने घर ले जाओ !

सेठ जी— पराये माल पर बुरी नियत मत डालो चिम्मनसिंह !

मिच्चन— चिम्मन लाल, चलो कुर्सियाँ उठाओ, और भारतीय अनाथालय में जमा करा दो ।

(कुर्सियाँ उठा कर तीनों चले जाते हैं ।)

दृश्य समाप्त

छटा दृश्य

(जनरल हिम्मत सिंह और अकबर खाँ विद्रोही सैनिकों के साथ बन्दीगृह में बन्द हैं।)

हिम्मत सिंह— 'इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।' अगर अपने ही गद्दारी न करते तो आज हम लोहे के सींकचों में बन्द न होते।

अकबर खाँ— सच कहते हो भाई जान! जी चाहता है धोखेबाज़ मोहन सिंह को नाखूनों से नोच डालूँ।

क्रान्तिकारी— अब कोई उपाय नहीं दीखता, पता नहीं भारत माता के पैरों की बेड़ियाँ कब कटेंगी?

हिम्मत सिंह— निराश न होओ भाई! विद्रोह की आग जब एक बार सुलग उठती है तो लक्ष्य तक पहुंचे बिना शान्त नहीं हुआ करती।

अकबर खाँ— मन समझाने के लिये ख्याल अच्छा है।

(चिम्मन और मिच्चन ठाठ से सेठ जी के साथ फूलों के हार लिये आते हैं।)

चिम्मन— जय, देश के शहीदों की जय।

मिच्चन— आपकी तपस्या पूरी हो रही है देशभक्तो! विदेशी हमारा देश छोड़कर जा रहे हैं। अभी अभी पुलिस आपके आगे हाथ जोड़ने, नाक रगड़ने, पैर चाटने आने ही वाली है।

हिम्मत सिंह— आखिर बात क्या है दोस्तो! साफ़ साफ़ बताओ न!

नगरसेठ— बात बिल्कुल साफ है, जब आपको पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया तो, मैंने, यानी नगरसेठ नौनिहालसिंह ने, धन की बोरियाँ खोल दीं। अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्तिकारियों को इतना धन दिया, इतना धन दिया कि लड़ाई का सारा सामान क्रान्तिकारियों के पास हो गया। अंग्रेज यह देखकर डर गये और उन्होंने भारत छोड़ने की कसम खा ली।

मिच्चन— अजी हमने सब विदेशियों को लड़ाई में मार डाला, पिस्तौल से किसी का सर उड़ा डाला, तलवार से किसी की आँख काट डाली, छुरे से किसी का पेट फाड़ डाला।

चिम्मन— बस बस, थोड़ा सा झूठ कल के लिये भी रहने दो। बात यह है देशभक्त जी, कि जब आप जेल में चले आये तो सारा देश गुस्से से लाल हो गया। आग की तरह धधकते हुए देश को देखकर अंग्रेजों ने सोचा कि तुम इस आग में जल जाओगे। इससे अच्छा यही है कि राजी खुशी हिन्दुस्तान छोड़कर चले जाओ।

हिम्मत सिंह— ये कोई आज़ादी के दीवाने दीखते हैं।

अकबर खाँ— जान पड़ता है सचमुच इनके पास खुशखबरी है।

नगरसेठ— खुशखबरी का प्रत्यक्ष प्रमाण देखते नहीं हमारे हाथ में है। हमको इतनी खुशी तो तब भी नहीं हुई थी जब हमने अपने बाबा की तिरामी पर कचौरियाँ खाई थीं।

मिच्चन— हमने सोचा कि कहीं आज़ादी की लड़ाई के इतिहास में तुम्हारा नाम न आये, इसलिये फूलों के हार लेकर ही जेलखाने चले चलो। कम से कम शहीदों में नाम तो लिखा ही जायेगा।

हिम्मत सिंह— ये तो कोई भंगड़ जान पड़ते हैं। क्यों भाई, तुम कौन हो ?

नगरसेठ— हमको नहीं जानते, इनको नहीं पहिचानते, हम गुलामी के दुश्मन और देशभक्तों के दोस्त हैं। हम चन्द्रशेखर आज़ाद के सच्चे पुजारी हैं।

चिम्मन— बिल्कुल सच्चे, ध्रुव से भी सच्चे।

मिच्चन— लो, वह सामने से पुलिस चली आ रही है।

(अंग्रेज़ अफसर के साथ पुलिस आती है।)

अफसर— आपको जेल से छोड़ा जाता है।

हिम्मत सिंह— क्यों, क्या देश आज़ाद हो गया ?

अफसर— अभी हुआ तो नहीं पर होने की आशा है, देश के नेताओं से स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में बातें चल रही हैं।

अकबर खाँ— 'जाट मरा तब जानियो जब तेरामी हो जाये।'

अफसर— अब आपको निराश नहीं होना चाहिये।

(कहता हुआ जेल के दर्वाज़े खोलता है। विद्रोही वीर गम्भीरता से बाहर निकलते हैं। चिम्मन, मिच्चन, नगरसेठ आदि हार पहनाते हैं, उछल उछल कर जय बोलते हैं।)

अकबर खाँ— (नगरसेठ से गले मिलते हुए) आप लोगों की खुशी बहुत क़ीमती है।

मिच्चन— अजी इनकी खुशी ही क्या हर चीज़ क़ीमती है।

हिम्मत सिंह— आप लोग भी खूब हैं।

चिम्मन— अजी हमारी खूबियाँ अभी आपने देखी ही कहाँ हैं, हम हँसतों को रुलादें और रोतों को हँसा दें।

अफ़सर— चलिये आप लोंग !

चिम्मन— चलिये, चलिये ! कहिये कार कहाँ खड़ी है ।

(हास्य मुद्रा में सब चले जाते हैं । पर्दा गिरता है ।)

दृश्य समाप्त

सातवां दृश्य

(विधवा वेश में कामना शक्ति के साथ आती है।)

कामना— सुना है देश स्वतन्त्र हो रहा है। इस हर्ष के अवसर पर यदि वे भी होते तो............... (कहते कहते गला रुंध जाता है, आँखें भर आती हैं।)

शक्ति— धैर्य धरो भाभी ! भैया ऐसी जगह नहीं गये जहाँ से वापिस आ जायें।

कामना— धीरज कैसे धरूँ बहिन ! बहुत समझाने पर भी मन नहीं समझता। ऐसा लग रहा है मानो अम्बर रक्त में नहा रहा है, पृथ्वी आँसू बहा रही है, और दिशायें मातम मना रही हैं।

शक्ति— जैसा मन होता है वैसी ही दुनिया दीखने लगती है। दुःखी को चारों ओर दुःख ही दुःख दीखते हैं।

कामना— स्वतन्त्र होने पर उनकी बड़ी बड़ी आशाएँ थीं बहिन ! पर............... (कहते कहते हिचकियाँ भरने लगती है।)

शक्ति— शान्त हो जाओ भाभी, इस स्वतन्त्रता के अवसर पर तुम रोओगी तो दुनिया क्याक हेगी।

कामना— दुनिया सुख की साथी होती है दुःख की नहीं। दुःख में तो आँसू भी साथ छोड़ देते हैं बहिन !

शक्ति— प्रलाप छोड़ो भाभी ! सुना है बन्दीगृह में माँ बहुत बीमार है। चलो उनको देख आयें।

कामना— न जाने मुझे क्या हो गया है बहिन, जी चाहता है अपने शरीर में आग लगा लूँ।

शक्ति— बावली न बनो भाभी ! रो रो कर आँखें खो दोगी, न खाने से जीवन पराश्रित हो जायेगा। उठो भाभी, जो जो भी दुःख आयें उन्हें सहती हुई जियो और औरों को जीवन दो। चलो भाभी ! सुना है माँ बहुत बीमार हैं।

कामना— चलो, बहिन चलो !

(कहती हुई चली जाती हैं। पर्दा उठता है, एक बड़े महल में, युगपुरुष, भारत और गरिमा बन्दी हैं, गरिमा बन्दी अवस्था में रुग्ण शैय्या पर पड़ी है। युगपुरुष और भारत बहकती हुई गरिमा के पास बैठे हैं।)

गरिमा— ठहरो, शेखर ठहरो ! मैं भी तुम्हारे साथ चल रही हूँ। क्या, क्या तुम मेरे लिये रथ लेकर आये हो ? मेरे होनहार लाल ! मैं अभी चलती हूँ।

युगपुरुष— क्या है देवी ?

गरिमा— कुछ नहीं युगपुरुष ! मैं जा रही हूँ।

भारत— कहाँ जा रही हो मुझे छोड़कर !

गरिमा— नहीं, स्वामी ! तुम भी मेरे साथ चलो। जल्दी तैयार हो जाओ, तुम्हारा लाल तुम्हारे लिये रथ लाया है। बैठो, बैठो, बैठो स्वामी !

युगपुरुष— गरिमा अब बचेगी नहीं। पुत्र की मृत्यु के दुःख से यह स्वयम् को भूल बैठी है।

भारत— (अपनी आँख का आँसू पोंछता हुआ) मरने वाला मर जाता है पर जीने वाले के लिये जीवन कितना कठोर हो जाता है।

गरिमा— क्या कह रहे हो स्वामी ! तनिक मेरे पास आओ !

भारत— (गरिमा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए) तुम मुझे छोड़कर न जाओ गरिमा !

गरिमा— धीरज रक्खो नाथ ! मैं आज़ाद को लेने जा रही हूँ, तुम्हारे लिये पुत्र, शक्ति के लिये भाई, और कामना के लिये पति ! प………ति !

(मृत्यु हो जाती है। पुलिस के साथ अंग्रेज़ अफसर आकर बन्दीगृह का द्वार खोलते हैं।)

अफसर— तुम्हारा देश तुम्हें वापिस मिल गया, अङ्गरेज़ भारत से जा रहे हैं। अब आप मुक्त किये जाते हैं।

भारत— क्या, क्या हमारा देश स्वतंत्र हो गया ? गरिमा ! सुन रही हो। तुम्हारे लाल की तपस्या सफल हो गई, कोटि कोटि शहीदों का रक्त फल दे गया। उठो, गरिमा उठो ! स्वतंत्रता की खुशी में तुम भी नाचो, गाओ ! (गरिमा को झंझोड़ता है, उसे उठाने का प्रयत्न करता है, पर वह तो मरी हुई थी।) नहीं, तुम अब नहीं उठोगी। इधर स्वतन्त्रता के दीपक जलेंगे और उधर तुम्हारी चिता जल रही होगी।

(शक्ति और कामना बाल बिखेरे दौड़ी हुई आती हैं।)

दोनों एक ही साथ— माँ ! पिता जी ! युगपुरुष ! (सबकी आँखों में आँसू देखकर) यह क्या तुम मौन क्यों हो, बोलते क्यों नहीं ! माता जी कहाँ हैं ! (उनको भूमि पर मृतक देखकर) यह इनको क्या हुआ ?

युगपुरुष— जो एक दिन सबको होता है, मृत्यु !

शक्ति— स्वतन्त्रता आई पर हम लुट गये। हम ही क्या, हम जैसे न जाने कितने नष्ट हुए हैं।

कामना— भोगो, अब तुम सब स्वतन्त्रता का सुख जी भर कर भोगो !

(जनता की भीड़ फूलों की मालायें लेकर आती है।)

—पहनो, तुम सब गा गा कर फूलों के हार पहनो, खुशियाँ मनाओ, गाओ ! हँसो ! प्रसन्नता में भूले भटके कभी यदि अवसर मिल जाये तो उन शहीदों को भी याद कर लेना जो स्वतन्त्रता के लिये हँसते हँसते मर गये। कभी आँख उठाकर उनकी ओर भी देख लेना जो शहीदों के बालक पिता पिता कह कर भूख से चिल्ला रहे होंगे। उन माँओं और बहनों को भी कभी कभी 'माँ' और 'बहिन' कहकर पुकार लेना जिनके घर में दिवाली को दीपक नहीं जला होगा।

शक्ति— दीपक जलने के साथ ही साथ शलभों की चितायें भी जलती हैं ! इधर स्वतन्त्रता के दीपक जल रहे हैं और उधर शहीदों की चितायें ! दिवाली के साथ ही साथ परवानों की राख भी उड़ती है।

युगपुरुष— बलिदानों की सुरभि से सुरभित सुरभि तो जिन्दगी में भी नहीं होती। शहीदों का रक्त तो भारत माँ की पूजा में अमर अर्घ्य है।

कामना— सन्तोष के लिये यह भाषा बहुत मीठी होती है महापुरुष ! पर जिसकी आँखों में हँसते गाते हर समय बरसात रहती है क्या कभी उन आँखों के दुःख को किसी ने समझा है !

शक्ति— किसी के दुःख को कोई नहीं पहचानता भाभी ! अपनी आँख का आँसू अपनी ही उँगली से पोंछना पड़ता है।

(सब तरफ स्वतन्त्रता के दीपक जलते हैं।)

कामना— लो, स्वतन्त्रता के दीप जल गये ! भारत माता की आरती में नृत्य करती हुई नागरिकायें आ रही हैं ।

(नाचती और गाती हुई नागरिकायें आती हैं, हर्ष और शोक का संगम होता है ।)

दीप जले !

भारत माता के मन्दिर में घी के दीप बले ।

सफल हुए बलिदान धरा जगमगा उठी दीपों से ।
पराधीनता उठी भूमि के भाग्यवान द्वीपों से ।।
आज शहीदों के शोणित से धरती लाल हुई है ।
मरघट के फूलों से फूलों वाली डाल हुई है ।।
दीप जले धरती पर धरती छोड़ शहीद चले ।
भारत माता के मन्दिर में घी के दीप बले ।।

दीप जले ।

धीरे धीरे अन्तिम पर्दा गिरता है ।

कामना— लो

में

प्रकाशक —
भारतीय साहित्य प्रकाशन
२३२, स्वराज्य पथ
सदर मेरठ ।